रूसो का जीवन परिचय

(LIFE HISTORY OF ROUSSEAU)

महान् दार्शनिक अपने विचारों तथा अपनी रचनाओं के कारण जाने जाते हैं न कि अपने जीवन की घटनाओं के कारण। उनके जीवन में प्रायः ऐसी घटनाएं कम होती हैं जो सामान्य व्यक्तियों के लिए दिलचस्पी का कारण बनें, परन्तु यह बात रूसो पर लागू नहीं होती। वह अपनी रचनाओं के लिए तो विश्वविख्यात है ही, परन्तु उसका जीवन भी अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण घटनाओं से भरा पड़ा है। वह तो एक रोमांचकारी उपन्यास अथवा भारतीय चित्रपट के नायक के समान प्रतीत होता है।

जीन जैक्स रूसो का जन्म 28 जून, 1712 को जिनेवा में हुआ। उसके पिता का नाम आइजक रूसो था जो धार्मिक अत्याचारों के कारण फ्रांस से भागकर जिनेवा चला गया था। रूसो के प्रजनन के समय उसकी माता का देहान्त हो गया। उसका पिता एक घड़ीसाज था पर नृत्य में उनकी इतनी रुचि थी कि उसके विशेषज्ञ बनने की धुन में वह अपना व्यवसाय छोड़ चुका था। वह चरित्रहीन, अशिक्षित एवं चंचल मनोवृत्ति का था जो अपने बेटे को उचित शिक्षा न दे सका। उसका पिता रात-रात भर रूसो से अश्लील और उच्छृंखल उपन्यास व कहानियां पढ़वाकर आनन्द प्राप्त करता था जिसका स्वाभाविक रूप से बच्चे की कोमल भावना पर अत्यन्त बुरा प्रभाव पड़ा। इस सम्बन्ध में रूसो ने लिखा है, "मेरी जो इच्छा होती थी, करता था और मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध कहने वाला कोई नहीं था। मेरे पिता मुझे रोमांचकारी यात्राओं और प्रेम कहानियों को सारी रात जोर-जोर से पढ़कर सुनाने के लिए जगाए रखते थे। इस प्रकार थोड़े ही समय में मुझे न केवल पढ़ने और समझने का अभ्यास हो गया बल्कि बचपन में ही मुझमें वासनात्मक प्रवृत्ति का ऐसा प्रादुर्भाव हो गया कि मैं प्रत्येक चीज का अनुभव तो करता था पर उसे समझता नहीं था। सभी प्रकार की अनिश्चित भावुकताओं ने, जिनके प्रभाव में, मैं एक के बाद एक आया, मेरे जीवन में आश्चर्यजनक और वासनापूर्ण प्रभाव डाला, जिससे मुझे अपने अनुभव और जानकारी के बाद भी काभी पूर्णतया मुक्ति नहीं मिल सकी।"

जब रूसो केवल दस वर्ष का था उसके पिता ने झगड़े में एक व्यक्ति को बुरी तरह घायल कर दिया और दण्ड के भय से जिनेवा छोड़कर भाग गया। भागने से पहले वह रूसो को उसके चाचा के संरक्षण में छोड़ गया। दो वर्ष तक उसके चाचा ने उसे शिक्षा देने के लिए बाईसी नगर में रखा। इसके पश्चात् वह वापस जिनेवा लाया गया। यहां पर उसे खुदाई का काम सीखने के लिए एक व्यक्ति के पास रखा गया। वह व्यक्ति उसे कार्य सिखाने के लिए अत्यन्त निर्दयतापूर्वक पीटा करता। एक दिन रूसो अपने स्वामी की दुष्टता से तंग आकर घर से भाग निकला। इन्हीं दिनों मां की अनुपस्थिति में जिस किसी स्त्री ने उसका पालन-पोषण करना चाहा उसी के साथ रूसो ने प्रेम करना शुरू कर दिया। जिस समय रूसो ने जिनेवा छोड़ा उस समय उसकी आयु सोलह वर्ष की थी। यहीं से रूसो के जीवन का आवारागर्दी का युग शुरू होता है जो जीवन पर्यन्त चलता रहा।

रूसो इसके बाद फ्रांस पहुंचा और अपने जीवन के भरण-पोषण के लिए फ्रांस के विभिन्न स्थानों में निरुद्देश्य भ्रमण और आवारागर्दी करता रहा। उसने छोटी-मोटी चोरियां भी कीं। जो भी धन्धा किया उसे छोड़ दिया, जहां भी नौकरी की वहां से उसे निकाला गया। इन्हीं दिनों रूसो एक कैथोलिक पादरी के सम्पर्क में आया जिसने उसके साथ अत्यन्त उदारतापूर्वक व्यवहार किया। रूसो को कैथोलिक धर्म में दीक्षित कर उसे ऐनसी में मेडम डीवारेन्स के संरक्षण में भिजवा दिया गया। इस महिला ने रूसो को शिक्षा प्राप्त करने के लिए तूरिन के एक मठ में प्रवेश करा दिया, परन्तु तब भी वह इस आवारा युवक से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकी। कुछ ही दिनों बाद रूसो वहां से भाग चला, किन्तु दर-दर ठोकरें खाने के बाद वह पुनः डीवारेन्स के द्वार पर आ गया। इस महिला ने रूसो की अपने प्रति इतनी श्रद्धा देखकर न केवल उसे संरक्षण दिया, अपितु उसे अपने प्रेमी के रूप में भी स्वीकार किया। सन् 1737 में रूसो कुछ दिनों के लिए जिनेवा चला गया। इस अवधि में डीवारेन्स ने अपने लिए एक और प्रेमी तलाश कर लिया। स्वाभिमानी रूसो के लिए यह एक बहुत बड़ा धक्का था। एक नारी द्वारा ठुकराए जाने पर रूसो ने दो वर्ष तक एकाकी व पीड़ायुक्त जीवन व्यतीत किया। सन् 1741 ई. में अपने कुछ मित्रों की सहायता से उसे वेनिस में फ्रांस के राजदूत के सचिव की नौकरी प्राप्त हो गयी, किन्तु 18 महीने की नौकरी के बाद उसे निकाल दिया गया। सन् 1744 में वह फिर

Scanned with CamScanner

से पेरिस आ गया। बदनाम रूसो को दोस्तों ने ठुकरा दिया। वह भीख मांगकर जीवन व्यतीत करने लगा। इन्हीं दिनों एक अनपढ़ धोबन येरेसी ने उसके सम्मुख अपना आंचल फ़ैला दिया। उस महिला से रूसो के पांच बच्चे हुए जिनमें एक को भी उसने स्वीकार नहीं किया और सभी बच्चों को अनाथालय में भिजवा दिया गया। सन् 1770 ई. में अपनी वृद्धावस्था में रूसो ने उससे विवाह कर लिया।

सन् 1750 ई. में रूसो के जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसने रूसो के जीवन में क्रान्तिकारी मोड़ उपस्थित कर दिया। प्रसिद्ध दार्शनिक दिदरो से मिलने के लिए एक दिन जब रूसो सड़क पर जा रहा था तो रास्ते में उसे अखबार का एक पृष्ठ पड़ा हुआ मिला। इसमें पेरिस की सबसे बड़ी साहित्यिक संस्था डी जान एकेडमी (Academy of De Jon) की ओर से उसमें निबन्ध प्रतियोगिता का एक विज्ञापन था। इस निबन्ध प्रतियोगिता का विषय था—"विज्ञान तथा कला की प्रगति ने नैतिकता को भ्रष्ट करने में योग दिया है अथवा उसे विशुद्ध करने में।" इस विज्ञापन को पढ़ते ही रूसो के मन में सैकड़ों विचारों का स्रोत फूट पड़ा। रूसो के शब्दों में, "उसका मस्तिष्क हजारों प्रकाश की किरणों से चकाचौंध हो गया। समाज के प्रति उसके क्रान्तिकारी विचारों का एकाएक स्रोत फूट निकला।" रूसो ने क्रान्तिकारी विचारों से ओत-प्रोत निबन्ध लिखा। उसने यह सिद्ध किया कि विज्ञान और कला ने मनुष्य का पतन किया है। मानव समाज की प्रारम्भिक अवस्था में सब मनुष्य सरल और निष्पाप जीवन बिताते हुए आनन्दपूर्वक रहते थे। वर्तमान समाज की सब बुराइयों का मूल सभ्यता की उन्नति, ज्ञान का प्रेम और सभ्य समाज का कृत्रिम जीवन है।

रूसो को प्रथम पुरस्कार मिला और इस पुरस्कार ने उसे विश्वविख्यात बना दिया। रूसो की भेंट तात्कालिक प्रमुख विचारक दिदरो तथा वाल्टेयर से होती है और दिदरो के साथ फ्रेन्च विश्व ज्ञानकोश में उसने लिखना आरम्भ किया। 1754 ई. में उसने एक दूसरी निबन्ध प्रतियोगिता के लिए निबन्ध लिखा जिसका शीर्षक था—"मनुष्यों में विषमता उत्पन्न होने का क्या कारण है : क्या प्राकृतिक कानून इसका समर्थन करता है।" इस निबन्ध में उसने निजी सम्पत्ति तथा आर्थिक विषमता उत्पन्न होने के कारणों पर प्रकाश डाला है। चूंकि अकादमी के निर्णायकों के विचार रूसो के विचार से मेल नहीं खाते थे इसलिए उसका निबन्ध पुरस्कृत नहीं हो सका। बाद में यही निबन्ध '*Discources on the Origin of Inequality*' के नाम से सन् 1755 में प्रकाशित हुआ जिसने फ्रांस की जनता में एक हलचल सी पैदा कर दी। यही ग्रन्थ बाद में फ्रांस के क्रान्तिकारियों की बाइबिल बन गया। रूसो ने अब कलम अपने हाथ में थाम ली और अनेक ग्रन्थों की रचना की। सन् 1762 में राजनीति पर उसकी प्रसिद्ध रचना सोशल कॉन्ट्रेक्ट (*The Social Contract*) तथा शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक इमाइल (*The Emile*) का प्रकाशन हुआ। उसके क्रान्तिकारी विचारों से शासकगण क्रुद्ध और विक्षुब्ध हो उठे। इमाइल में व्यक्त विचारों से पादरी लोग उससे नाराज हो गए। अपने धर्म विरोधी और राजतन्त्र विरोधी विचारों के कारण उसकी मातृभूमि जिनेवा की परिषद् ने इन दोनों ग्रन्थों को जला डालने का तथा जिनेवा आने पर रूसो को बन्दी बनाने का आदेश प्रसारित किया। फ्रेन्च सरकार ने भी इसी कारण उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। रूसो को अपने प्राण रक्षा के लिए फ्रांस से भागना पड़ा। प्रताड़ित और तिरस्कृत रूसो चिड़चिड़ा होकर पागलों की तरह फ्रांस, इंग्लैण्ड और स्विट्जरलैण्ड में घूमता रहा। उसके दिमाग की विक्षिप्तता बढ़ती जा रही थी। अपने मित्रों पर वह शक करने लगा कि वे उसे मार डालना चाहते हैं। फ्रेन्च राज्य क्रान्ति से 11 वर्ष पहले सन् 1778 में 66 वर्ष की आयु में उसका निधन हो गया।

रूसो की रचनाएं
(WORKS OF ROUSSEAU)

रूसो की निम्नलिखित रचनाएं उल्लेखनीय हैं :

1. डिसकोर्सेज आन दि मॉरल एफेक्ट्स ऑफ दि ऑर्ट्स एण्ड साइन्सेज (*Discources on the Moral Effects of the Arts and Sciences*, 1751) इसमें रूसो ने बताया है कि विज्ञान और कला ने मनुष्य की अवनति में क्या योगदान दिया है।
2. डिसकोर्सेज आन दि आरिजिन ऑफ इनइक्वैलिटी (*Discources on the Origin of Inequality*, 1755) इसमें रूसो ने बताया कि समाज में विषमता कैसे उत्पन्न हुई।

Scanned with CamScanner

3. इकनॉमिक पॉलिटिक (*Economic Politique*, 1755) रूसो द्वारा लिखित यह लेखक दिदरो द्वारा सम्पादित विश्वकोश में प्रकाशित हुआ।
4. सोशल कान्ट्रेक्ट (*Social Contract*, 1762) इसमें राजदर्शन सम्बन्धी गम्भीर विचारों का विवेचन है।
5. लेटर्स दि ला मोण्टेन (*Letters de la Montagne*, 1764)
6. दि इमाइल (*The Emile*, 1762) इसमें शिक्षा सम्बन्धी प्रगतिशील विचारों का उल्लेख है।
7. कन्फेशन्स (*Confessions*)

रूसो के विचारों पर प्रभाव
(THE INFLUENCES ON ROUSSEAU'S THOUGHT)

रूसो की विचारधारा पर उसके युग की परिस्थितियों तथा अनेक राजनीतिक दार्शनिकों का प्रभाव दिखायी देता है। मोटे तौर पर हम रूसो पर दिखायी देने वाले प्रभावों को निम्न भागों में बांट सकते हैं :

1. रूसो के विचारों पर जॉन लॉक और प्लेटो का स्पष्ट प्रभाव है। बार्कर ने लिखा है कि रूसो ने आरम्भ तो अवश्य ही लॉक से किया पर लौटकर वह प्लेटो के रिपब्लिक तक पहुंचा और फिर आगे बढ़कर हीगल की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। प्लेटो और अरस्तू की भांति रूसो ने कहा कि 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, मनुष्य का पूर्ण जीवन केवल समाज में ही सम्भव है। राज्य की अधीनता मनुष्य इसलिए स्वीकार करता है कि राज्य उसका नैतिक नियन्त्रण करे और व्यक्ति को अन्तिम लक्ष्य की ओर ले जाने में सफल हो।

2. अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सोशल कान्ट्रेक्ट' की रचना करते समय रूसो पर हॉब्स और लॉक के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। हॉब्स के प्रभाव के कारण रूसो के विचार तीव्र व्यक्तिवादी प्रतीत होते हैं और अन्त में वह निरंकुशतावाद का भी समर्थन कर बैठता है तथा लॉक के प्रभाव के कारण वह लोकतन्त्र का समर्थक है तथा राज्य की स्थापना का आधार सहमति मानता है।

3. जिनेवा के वातावरण से भी रूसो प्रभावित हुआ है, इसीलिए उसके राजनीतिक विचार स्थानिक रहे। वह छोटे नगर-राज्यों के पक्ष में था।

4. फ्रांस की तात्कालिक परिस्थितियों से भी रूसो प्रभावित हुआ। उस समय मुख्य प्रश्न यह था कि निरंकुश, राजसत्ता, सामन्तशाही और चर्च की अतियों से सामान्य जनता को कैसे राहत मिले। रूसो के सामने राजत्व की सम्प्रभुता के समर्थन के स्थान पर सामान्य जनता के लिए शासन की क्रूरता और चतुर्दिक शोषण से मुक्ति का प्रश्न था।

5. राज्य पर प्रभाव डालने वाले तत्व जैसे बाह्य परिस्थितियां, ऐतिहासिक परम्पराएं आदि के सम्बन्ध में जब रूसो लिखता है तो उस पर मॉन्टेस्क्यू का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

वाहन के शब्दों में, "रूसो ने लॉक के शिष्य के रूप में आरम्भ किया;अपने विकास के महत्वपूर्ण वर्षों में वे पूरे हृदय के साथ प्लेटो के शिष्य रहे और अन्त तक वे मॉण्टेस्क्यू के जादू में आ गए, अवश्य ही मॉण्टेस्क्यू के प्रभाव में आने वाले ये सबसे महान् विचारक थे।"

रूसो के प्रमुख राजनीतिक विचार
(MAIN POLITICAL IDEAS OF ROUSSEAU)

यद्यपि हॉब्स और लॉक की तरह रूसो भी समाज और राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सामाजिक समझौता सिद्धान्त का समर्थक है तथापि उसका उद्देश्य उसकी तरह व्यक्तिवाद और प्राकृतिक अधिकारों का समर्थन करना मात्र नहीं था। इनके विपरीत, रूसो समाज के नैतिक पतन के प्रति अत्यधिक चिन्तित था और चाहता था कि इस अभिशाप से मुक्त होकर मनुष्य का जीवन पुनः नैतिक दृष्टि से उच्च हो जाए। अतः वह समाज और राज्य की आदर्शवादी दृष्टिकोण से विवेचना करता है और इसी आधार पर मानव स्वभाव और प्राकृतिक अवस्था का वर्णन करता है। रूसो ने अपनी पुस्तक 'दि सोशल कान्ट्रेक्ट' में अपने समझौता सिद्धान्त का विस्तार से प्रतिपादन किया है। रूसो के प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं—

रूसो का सामाजिक समझौता (Rousseau's Theory of Social Contract)—रूसो के समझौता सम्बन्धी विचारों को अग्र शीर्षकों में समझा जा सकता है—

Scanned with CamScanner

1. मानव स्वभाव,
2. प्राकृतिक अवस्था,
3. समझौते के कारण,
4. सामाजिक समझौता तथा राज्य का स्वरूप,
5. सामाजिक समझौते की विशेषताएं।

1. **मानव स्वभाव** (Human Nature)—रूसो की रचनाओं में मनुष्य का चित्रण एक ऐसे तनावग्रस्त व्यक्ति के रूप में है जिसका तनावमय अतीत एक तनाव मुक्त भविष्य का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। इस तनावग्रस्त व्यक्ति की दो वृत्तियां हैं—स्वार्थ और परमार्थ (Self love and Sympathy) जो आपसी कशमकश में रहती हैं। इस तनाव में से चेतना (Conscience) का जन्म होता है। रूसो के अनुसार चेतना एक नेत्रहीन इच्छा है जो शुभ कर्म करना तो चाहती है, परन्तु यह नहीं जानती कि शुभकर्म क्या है? इसलिए मनुष्य की आत्म सिद्धि के लिए रूसो विवेक (Reason) का सहारा लेता है। विवेक अच्छाई और बुराई में अन्तर स्पष्ट करता है। इन तत्वों के आधार पर रूसो दो प्रकार के व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करता है—(i) अप्राकृतिक व्यक्ति जिसमें स्वार्थ और परमार्थ युद्ध-रत हैं, जिसकी चेतना अन्धी है और विवेक पथभ्रष्ट है। ऐसा व्यक्ति लगातार भटकता रहता है और (ii) इसके विपरीत, प्राकृतिक मनुष्य वह है जिसमें या तो तनाव पैदा ही न हुआ हो या जिसने शक्तिशाली विवेक और अडिग चेतना के द्वारा आत्महित और परमार्थ में सामंजस्य बिठा लिया हो।

रूसो के अनुसार आदिम मनुष्य एक ऐसा व्यक्ति था जिसमें यह तनाव पैदा ही नहीं हुआ था। वह प्रसन्न और सन्तुष्ट था। पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों की तरह वह पैदा होकर प्राकृतिक रूप से ही समाप्त हो जाता था।

रूसो प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य को स्वाभाविक रूप से अच्छा, सुखी, सीधा, चिन्तारहित, स्वस्थ, शान्तिप्रेमी और एकान्तप्रिय समझता था। इस विषय में रूसो का विचार हॉब्स तथा लॉक दोनों से ही भिन्न है। हॉब्स का कहना था कि प्राकृतिक दशा में रहने वाला मनुष्य न केवल हिंस्र और क्रूर था, प्रत्युत कपटी भी था। दूसरी ओर लॉक ने मनुष्य को प्राकृतिक नियम और ईश्वरीय नियम से अनुशासित होने वाला माना था। रूसो प्राकृतिक दशा में नैतिकता के ऐसे उच्च विकास को भी असम्भव मानता है। अतः दोनों के विचारों को गलत मानते हुए रूसो ने आदिम मनुष्य को पशुतुल्य, निष्पाप, निर्दोष तथा स्वाभाविक रूप से अच्छा माना है।

रूसो के अनुसार सभ्यता के उदय और विकास के साथ-साथ मनुष्य की तनावग्रस्तता बढ़ती गई। रूसो के विचार में समकालीन सभ्यता एक तनावग्रस्त सभ्यता है। यह मनुष्य को प्रफुल्लचित्त रखने वाला बाग नहीं, बल्कि एक कैद है। इसलिए मनुष्य की इच्छा है कि वह एक ऐसी सभ्यता का निर्माण करे जो प्राकृतिक मनुष्य की सभ्यता हो और जहां उसके स्वार्थ और परमार्थ में चेतना और विवेक के अनुसार समन्वय हो सके।

2. **प्राकृतिक अवस्था** (State of Nature)—रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य प्रकृति की गोद में रहता था। उसका जीवन पशुओं जैसा व एकाकी था। वह अपना जीवन वनों में विचरण करके बिताता था। किसी व्यक्ति का कोई घर न था और न उसकी कोई सम्पत्ति थी। मनुष्य अपनी प्रकृति की सादगी और परमार्थ की भावना के साथ उसमें सादगी से रहता था। इस अवस्था में सब समान थे तथा अपने-अपने जीवन के स्वामी थे। कोई कलह, द्वेष, मारपीट नहीं थी। कोई सभ्यता नहीं थी तथा सभ्यता की आवश्यकता भी नहीं थी। मनुष्य एकान्त में सुखी, बेपरवाह जिन्दगी जी रहा था; न ही वस्त्र धारण करता था, न ही भाषा का माध्यम था।

इस प्रकार रूसो के अनुसार प्राकृतिक मनुष्य एकाकी, स्वतन्त्र, नैतिक-अनैतिक भावनाओं से मुक्त, निःस्वार्थ, सम्पत्ति और परिवार से रहित आदिम स्वर्णयुग की स्वर्गीय दशा में रहता था। प्राकृतिक अवस्था के व्यक्ति के लिए रूसो 'आदर्श बर्बर' (Noble Savage) शब्द का प्रयोग करता है। प्राकृतिक अवस्था में व्यक्ति एक भोले और अज्ञानी बालक की भांति सादगी और परमसुख का जीवन व्यतीत करता था।

Scanned with CamScanner

रूसो के अनुसार प्राकृतिक अवस्था अनैतिक (immoral) नहीं हो सकती है, इसे न सद्गुण की अवस्था कहा जा सकता है। यह धोखाधड़ी और युद्ध की अवस्था बिल्कुल ही नहीं थी क्योंकि अनैतिकता का बोध तब होता है जब मनुष्य में किसी उच्च गुण के समझने की क्षमता होती है और उच्च गुणों का वह दिग्दर्शन करता है। धोखाधड़ी करने की प्रवृत्ति भी तब जागती है जब उसमें हिसाबी बुद्धि का उदय होता है। यह प्राकृतिक अवस्था में थी ही नहीं। गूच के शब्दों में, "रूसो द्वारा चित्रित प्राकृतिक अवस्था न तो हॉब्स के सदृश्य सभी का सभी के विरुद्ध युद्ध की थी और न ही लॉक की शान्ति व सद्इच्छा की अवस्था जैसी थी। यह ऐसी दशा थी कि जिसमें व्यक्ति पशु जैसा अकेला जीवन बिताता था।"

आज के तथाकथित सभ्य और विकसित व्यक्ति की प्राकृतिक मानव से तुलना करने के पश्चात् ही रूसो कहता है—"Give us back the ignorance, innocence and poverty, which alone can make us happy."

3. **समझौते के कारण** (Causes of the Social Contract)—प्राकृतिक अवस्था 'आदर्श अवस्था' थी जहां मनुष्य एक मासूम, निर्दोष और निर्मल पंछी की तरह प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेता हुआ, स्वच्छन्दतापूर्वक विहार करता हुआ मस्त जीवन व्यतीत करता था। उसे किसी प्रकार की चिन्ता न थी, उसका जीवन शान्तिपूर्ण और सुखी था, परन्तु यह स्वर्णिम अवस्था अधिक दिनों तक कायम न रह सकी। मानव के ज्ञान में वृद्धि हुई। मनुष्य को अग्नि का ज्ञान हुआ। कुछ मोटे ढंग के हथियार व औजार अस्तित्व में आए। लोगों का घुमक्कड़ वनचर जीवन छूट गया और वे निश्चित स्थान पर बसने लगे। स्त्री पुरुषों का आकस्मिक मिलन कुछ स्थायी होने लगा और परिवार भी अस्तित्व में आए। मनुष्यों में परिवार के साथ-साथ सम्पत्ति बनाने की इच्छा हुई। व्यक्तिगत सम्पत्ति की मान्यता के कारण लोगों में परस्पर कलह, द्वेष, हिंसा व युद्ध आदि का प्रादुर्भाव हुआ। "सम्पत्ति सम्बन्धी सर्प मानव समाज में पैदा हो गया और उसकी सुख-शान्ति काफूर हो गई।" सम्पत्ति के कारण ही धनी व निर्धन का भेद उत्पन्न हुआ। इससे उदात्त वनेचर (Noble Savage) की स्वाभाविक समानता, स्वतन्त्रता समाप्त हो गई एवं दास प्रथा आदि बुराइयां उत्पन्न हुईं। व्यक्तिगत सम्पत्ति ने प्राकृतिक अवस्था की शान्ति भंग करके एक ऐसे सभ्य कहे जाने वाले समाज को जन्म दिया जिसने मनुष्य से मनुष्य की सादगी, ईमानदारी, समानता, परमार्थ की भावना छीनकर उसे इंसानियत का दुश्मन, सम्पत्ति का भूखा, स्वार्थी, घमण्डी बना दिया, अतः सभ्यता, सभ्य समाज, विज्ञान, सम्पत्ति आदि मनुष्य की दुश्मन हैं।

रूसो के अनुसार सभ्यता की वृद्धि के साथ-साथ दरिद्रता, शोषण, हत्या और बीमारी बढ़ती चली गई। युद्ध और तनाव ने मनुष्य को हिंसक बना दिया जिससे समाज की वह दशा हो गई जो हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था में थी। रूसो के शब्दों में, "समाज और राज्य का उदय ऐसा था जिसने गरीबों को नयी जंजीरों में बांध दिया और अमीरों को नयी शक्ति दे दी जिसने प्राकृतिक स्वतन्त्रता को बिल्कुल नष्ट कर दिया, सम्पत्ति के कानूनों को बनाकर असमानता को जन्म दिया और कुछ महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लाभ के लिए सारी मानवता को सदा के लिए मजदूरी, गुलामी और दयनीय स्थिति में धकेल दिया।"

रूसो के अनुसार सम्पत्ति के प्रादुर्भाव से मनुष्य की स्वतन्त्रता परतन्त्रता में बदल गई जिसको लक्ष्य करके वह कहता है कि "मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है, किन्तु सर्वत्र वह बेड़ियों से जकड़ा हुआ है।" इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य को स्वतन्त्र एवं स्वाधीन होना चाहिए, यही उसके लिए सर्वोत्तम दशा है, किन्तु समाज के नियम, रूढ़ियां तथा प्रतिबन्ध उसे दास बना रहे हैं, उसकी विशुद्ध प्राकृतिक दशा के जन्मसिद्ध स्वाभाविक अधिकार से उसे वंचित कर रहे हैं। वह अपनी स्वतन्त्रता का उपभोग करने के लिए इन बन्धनों से किस प्रकार मुक्त हो, यह रूसो के राजनीतिक चिन्तन की मूल समस्या है।

संक्षेप में, मनुष्य की बेड़ियां या परतन्त्रता मनुष्य को व्याकुल करने लगी और वह इससे मुक्ति प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो उठा। अतः उसने अपने को सर्वनाश की ओर ले जाने वाली इस अराजक व्यवस्था का अन्त करने के लिए अनुबन्ध या सामाजिक समझौते के आधार पर राज्य की स्थापना की।

रूसो का स्पष्ट मत है कि मनुष्य ने स्वयं ही अपनी खुशियों का, समानता का, स्वतन्त्रता का गला घोंटा है, परन्तु इन्हें दुबारा प्राप्त करना अपरिहार्य हैं क्योंकि स्वतन्त्रता, समानता और प्रसन्नता के बिना जीवन व्यर्थ था। प्रश्न है कि इन्हें कैसे प्राप्त किया जाए? रूसो का उत्तर था—"प्रकृति की ओर चलो" (Back to

"Man is born free and everywhere he is in chains."

Scanned with CamScanner

the nature)। वह कहता था कि हमें "हमारा अज्ञान, हमारा भोलापन, हमारी गरीबी लौटा दो, हम स्वतन्त्र हो जाएंगे।"

परन्तु रूसो को इस बात का निश्चय हो चुका था कि नागरिक समाज से प्राकृतिक अवस्था की ओर लौटना असम्भव है। अतः अब वह प्रकृति की ओर लौट चलने का आवाहन नहीं देता। मैक्सी के शब्दों में 'अब उसकी दिशा आगे की ओर है न कि पीछे की ओर' (His direction is now forward, not backward)। अब रूसो के सामने समस्या थी—"क्या यह सम्भव है कि ऐसे समाज की स्थापना की जाए जो अपने सदस्यों के जन-धन की पूर्ण शक्ति के साथ रक्षा करे, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के साथ एक होते हुए भी केवल अपने आदेशानुसार आचरण कर सके और पहले की भांति स्वतन्त्र रह सके?" इस समस्या का समाधान था—"सामाजिक समझौता", जिसे हॉब्स, लॉक आदि दार्शनिक पहले ही प्रतिपादित कर चुके थे।

4. **सामाजिक समझौता तथा राज्य का स्वरूप** (Social Contract and Nature of State)—युद्ध और संघर्ष के वातावरण का अन्त करने के लिए रूसो एक सामाजिक समझौते की कल्पना करता है। सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित हुए और उनके द्वारा सम्पूर्ण अधिकारों का समर्पण किया गया, किन्तु अधिकारों का यह समर्पण किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण समाज के लिए किया गया।

रूसो के अनुसार मनुष्यों ने आपस में एक समझौता किया। इस समझौते में सभी व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों को किसी व्यक्ति विशेष को अर्पित न कर सम्पूर्ण समाज को अर्पित करता है। इस प्रकार यह समझौता लोगों के निजी स्वरूप और सामूहिक स्वरूप के मध्य हुआ। अ, ब, स, द आदि ने अपने अधिकारों को अ+ब+स+द के सामूहिक स्वरूप को सौंप दिया। इसमें किसी की हानि नहीं, वरन् सबका लाभ ही होता है क्योंकि जब उनमें से किसी एक के व्यक्तिगत अधिकारों पर आक्रमण होता है तो उसकी रक्षा के लिए सारा समाज उपस्थित हो जाता है। रूसो की कल्पना के अनुसार—"हम में से प्रत्येक अपने व्यक्तित्व और सभी शक्तियों को सामान्य रूप से सार्वजनिक इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अन्तर्गत रखता है और हम संयुक्त रूप से सार्वजनिक इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अन्तर्गत रहते हैं और हम संयुक्त रूप से प्रत्येक सदस्य को सम्पूर्ण संगठन के अखण्ड हिस्से के रूप में पाते हैं।"

"समझौता करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत व्यक्तित्व के स्थान पर, समूह बनाने की इस प्रक्रिया में, एकदम एक नैतिक तथा सामूहिक निकाय (Collective body) का जन्म होता है जो कि उतने ही सदस्यों से मिलकर बना है जितने कि उसमें मत होते हैं। समुदाय बनाने के इस कार्य से ही इस निकाय की अपनी एकता, अपनी सामान्य सत्ता, अपना जीवन तथा अपनी इच्छा प्राप्त होती है। समस्त व्यक्तियों के बने संगठन से बने हुए इस सार्वजनिक व्यक्ति को पहले नगर कहते थे, अब इसे गणराज्य कहते हैं और जब सक्रिय होता है तो सम्प्रभु तथा ऐसे ही अन्य निकायों से इसकी तुलना करने पर इसे शक्ति कहते हैं।"

सामाजिक समझौते द्वारा निर्मित '**राज्य**' को 'सामान्य इच्छा' (General will) कहा जाता है। सम्प्रभुता की अभिव्यक्ति 'सामान्य इच्छा' में ही होती है। सभी व्यक्ति सामान्य इच्छा के अधीन रहते हुए कार्य करते हैं। प्रत्येक नागरिक का सम्प्रभुता में एक भाग होता है और साथ ही वह जानता भी है क्योंकि उसे उस कानून को मानना पड़ता है जिसे उसने स्वयं सम्प्रभु के रूप में बनाया है। इस प्रकार रूसो के दर्शन में हमें 'जनप्रिय सम्प्रभुता' (Popular Sovereignty) और लोकतन्त्रीय सरकार की आधारशिला मिलती है।

5. **सामाजिक समझौते की विशेषताएं** (Salient Features of the Social Contract)—रूसो के सामाजिक समझौते की निम्न विशेषताओं से इसे सरलता से समझा जा सकता है—

1. सामाजिक समझौते के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण शक्ति व अपने अधिकारों को सबको समर्पित कर देता है। इस समर्पण का आधार और शर्त है समता क्योंकि सभी व्यक्तियों ने समान रूप से अपने अधिकारों का समर्पण कर दिया।

2. समझौते की क्रिया के द्वारा अलग-अलग व्यक्तियों के निजी व्यक्तित्व के स्थान पर एक सामूहिक व्यक्तित्व स्थापित हो जाता है, जिसकी एक पृथक् एकता, पहचान, जीवन तथा इच्छा होती है।

3. सामाजिक समझौते के परिणामस्वरूप मनुष्य की परतन्त्रता का अन्त हो जाता है, वह वास्तविक रूप से स्वतन्त्र हो जाता है और जीवन की एक निश्चित विधि में ढल जाता है।

Scanned with CamScanner

4. समझौते के परिणामस्वरूप व्यष्टि का स्थान समष्टि तथा व्यक्तिगत इच्छा का स्थान सामान्य इच्छा ले लेती है।

5. रूसो के अनुसार समझौते से किसी सरकार की स्थापना नहीं होती वरन् उससे सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न एक ऐसे समाज की स्थापना होती है जिसके संचालन का आधार समाज की सामान्य इच्छा होती है। समझौते द्वारा स्थापित सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाज अपनी सामान्य इच्छा के अनुसार समाज का संचालन करने के लिए सरकार की नियुक्ति करता है जो उस समाज का एक यन्त्र मात्र होती है तथा ऐसी सरकार यदि सामान्य इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करती, तो उसे बदला व हटाया जा सकता है।

6. इस समझौते के द्वारा व्यक्ति कुछ भी नहीं खोता क्योंकि जो अधिकार वह दूसरों को अपने ऊपर देता है वही अधिकार वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर प्राप्त कर लेता है।

7. रूसो के अनुसार समझौता कोई ऐसी घटना नहीं है जो कभी एक बार घटी हो। यह तो एक निरन्तर चलने वाला क्रम है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति सामान्य इच्छा में निरन्तर भाग लेता रहता है।

8. इस प्रकार उत्पन्न राज्य एक सावयव (Organic) राज्य है। प्रत्येक व्यक्ति राज्य का अविभाज्य अंग होने के कारण राज्य से किसी भी प्रकार अलग नहीं हो सकता और न ही व्यक्ति राज्य के विरुद्ध आचरण कर सकता है।

इस प्रकार रूसो का सामाजिक समझौता हॉब्स और लॉक के समझौते से भिन्न होते हुए भी प्रभावित अवश्य है। हॉब्स की भांति रूसो ने माना है कि समझौते के लिए उत्सुक व्यक्तियों ने अपने सम्पूर्ण अधिकार बिना किसी शर्त के समर्पित कर दिये, लेकिन यह अवश्य है कि हॉब्स के मन्तव्य के विपरीत ये अधिकार किसी एक व्यक्ति या व्यक्ति समूह को नहीं सौंपे गए। लॉक की भांति रूसो ने यह स्वीकार किया है कि समझौते के बाद सम्पूर्ण सत्ता समाज में ही निहित रही। रूसो की इस स्थिति के बारे में गैटेल ने लिखा है, "रूसो की रचना का यह भाग हॉब्स और लॉक दोनों से प्रभावित था, हॉब्स की पद्धति और लॉक के निष्कर्ष को जिज्ञासापूर्वक संयुक्त कर दिया गया....इस प्रकार हॉब्स की तरह जहां सत्ता निरंकुश स्थापित हुई, वहां लॉक की तरह व्यक्ति अब भी समान अधिकार रखते थे।"[1]

रूसो के समझौते सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of Rousseau's Social Contract Theory)—17वीं और 18वीं शताब्दी में सामाजिक समझौते का सिद्धान्त अत्यन्त लोकप्रिय रहा, परन्तु रूसो की मृत्यु के उपरान्त इसका पूर्ण पतन हो गया। बेन्थम, सर फ्रेडरिक पोलक, वाहन, एडमण्ड बर्क, आदि विद्वानों ने इस सिद्धान्त की कटु आलोचना की है। सर हेनरीमेन ने तो स्पष्ट कहा है कि "समाज तथा सरकार की उत्पत्ति के इस वर्णन से बढ़कर व्यर्थ की वस्तु और क्या हो सकती है?" निम्न तर्कों के आधार पर इस सिद्धान्त की आलोचना की जा सकती है :

1. **प्राकृतिक अवस्था काल्पनिक है**—रूसो ने प्राकृतिक अवस्था का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह निराधार एवं काल्पनिक है। ऐतिहासिक तथ्य यह किसी भी प्रकार प्रमाणित नहीं करते कि मनुष्य ऐसा शान्तिमय, सुखमय और आदर्श जीवन-यापन कभी करते थे।

2. **मानव स्वभाव का गलत अध्ययन**—रूसो की प्राकृतिक अवस्था का चित्रण मानव स्वभाव की गलत धारणा पर बना है। उसका मत है कि मौलिक रूप से मनुष्य अच्छा और गुणी है। उसके समस्त दोष बाह्य परिस्थितियों द्वारा उत्पन्न हुए हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है। निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मनुष्य अच्छाई और बुराई का सम्मिश्रण है।

3. **विचित्र विरोधाभास**—रूसो के अनुसार यह समझौता व्यक्ति और समाज में होता है और दूसरी ओर रूसो यह बताता है कि समाज समझौते का परिणाम है। यह एक विरोधाभास है जो समझौते की धारणा को असंगत बनाता है। इसके अतिरिक्त रूसो के वर्णन में एक अन्य असंगति यह है कि कहीं तो वह समझौते को ऐतिहासिक घटना कहता है और कहीं उसे एक निरन्तर चलने वाला क्रम।

Scanned with CamScanner

4. **सामाजिक प्रगति के सिद्धान्त का विरोध**—रूसो सामाजिक प्रगति के सिद्धान्त का विरोध करता है। उसकी यह मान्यता है कि जैसे-जैसे समाज प्राकृतिक जीवन से दूर हुआ है वैसे-वैसे उसका पतन हुआ है, लेकिन यह बात तथ्यपूर्ण नहीं है। मानव जाति का आज तक का इतिहास उसकी प्रगति का इतिहास है। ज्ञान और विज्ञान दोनों के क्षेत्रों के विकास के जिन शिखरों को आज मनुष्य स्पर्श कर पाने में सफल हुआ है वैसा अतीत में कभी नहीं हुआ। मनुष्य में विद्यमान जिज्ञासा की प्रवृत्ति उसे हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

5. **राज्य समझौते का नहीं, विकास का परिणाम है**—रूसो की धारणा सरासर गलत है कि राज्य का जन्म किसी समझौते के कारण हुआ है। आज यह सिद्ध हो चुका है कि राज्य का किसी समय विशेष में जन्म नहीं हुआ वरन् उसका शनैः-शनैः विकास हुआ है।

6. **व्यक्ति को निरंकुशता के हवाले कर देना**—रूसो के अनुसार समझौते के द्वारा व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण स्वतन्त्रता और अधिकार समाज को समर्पित कर देता है। अतः उसकी स्थिति स्वतन्त्रता और अधिकारविहीन हो जाती है। रूसो इसकी सफाई यह कहकर देता है कि समाज का सदस्य होने के नाते व्यक्ति अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता और अधिकार पुनः प्राप्त कर लेता है, किन्तु यह एक सैद्धान्तिक कथन मात्र है। वास्तविकता यह है कि रूसो ने व्यक्ति को पूर्णतः सामान्य इच्छा की निरंकुशता के हवाले कर दिया है।

7. **व्यक्ति की स्थिति हास्यास्पद**—रूसो ने व्यक्ति को दोहरा व्यक्तित्व प्रदान किया है। शासन के रूप में वह नागरिक है और कानून का आदेश पालन करने वाले के रूप में प्रजा है—अर्थात् वह नागरिक और प्रजा दोनों है। नागरिक की इस दोहरी स्थिति से जो परिणाम निकलते हैं वे बुद्धि से परे और हास्यास्पद हैं। उदाहरण के लिए, अगर एक व्यक्ति को राजाज्ञा से फांसी पर लटकाया जाता है तो रूसो के अनुसार उसके सम्बन्ध में यह कहा जाएगा कि उसने एक नागरिक की तरह अपने आपको फांसी पर लटकाए जाने की आज्ञा दी और एक प्रजा की तरह राजाज्ञा का पालन करते हुए वह फांसी पर लटक गया। यह न समझ में आने वाली विचित्र बात है।

8. **रूसो का राज्य 'शीश कटा लेवियाथन'**—रूसो राज्य व समाज में किसी प्रकार का अन्तर नहीं करता। फलतः रूसो का राज्य एक सर्वाधिकारवादी राज्य बन जाता है जिसे आलोचकों ने 'शीशविहीन लेवियाथन' कहा है। उसे 'शीशविहीन लेवियाथन' इसलिए कहा गया है कि यद्यपि हॉब्स के 'लेवियाथन' की तरह वह सामान्य इच्छा से निर्देशित होने के कारण निरंकुश नहीं है, लेकिन सामान्य इच्छा क्या है इसका निर्धारण करने का एकाधिकार उसके हाथों में केन्द्रित है। अतः व्यावहारिक रूप से वह निरंकुश हो जाता है। इस तरह वह सामान्य इच्छा से जो पूर्ण जनतान्त्रिक है, निर्देशित होते हुए भी निरंकुशता का उपयोग करने की स्थिति में बना रहता है। इसलिए वह एक 'शीश कटा लेवियाथन' है।

रूसो के सामाजिक समझौते सिद्धान्त का महत्व (Significance of Rousseau's Social Contract Theory)—रूसो के सिद्धान्त की आलोचना की गई है, इसे काल्पनिक तथा निरंकुश कहा गया है तथापि उसके सिद्धान्त का महत्व अवश्य है। प्रथम, इस सिद्धान्त के द्वारा रूसो ने दैवी अधिकार के सिद्धान्त पर कटु प्रहार किया। द्वितीय, इस सिद्धान्त ने राज्य को मानवीय संस्था बताकर निरंकुश शासन का विरोध किया। तृतीय, इस सिद्धान्त ने इस बात पर जोर दिया है कि राज्य और शासन का अधिकार जन सहमति है। पंचम, इसने लोकप्रिय सम्प्रभुता को सुदृढ़ बनाया।

रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धान्त
(ROUSSEAU'S THEORY OF GENERAL WILL)

सामान्य इच्छा का सिद्धान्त रूसो का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धान्त है। कुछ विचारक इस सिद्धान्त को सबसे अधिक खतरनाक सिद्धान्त मानते हैं जबकि अन्य विचारकों की राय में सामान्य इच्छा का सिद्धान्त लोकतन्त्र तथा राजनीति दर्शन की आधारशिला है। आस्बर्न के शब्दों में, "सामान्य इच्छा का सिद्धान्त राजनीति दर्शन को न केवल रूसो का मौलिक योगदान है अपितु सबसे महत्वपूर्ण योगदान भी है।"[1] रूसो

Scanned with CamScanner

की मुख्य समस्या यह है कि किस प्रकार सामाजिक सत्ता और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में समन्वय स्थापित किया जाए और किस प्रकार स्वतन्त्रता रूपी अण्डे को तोड़े बिना राज्य रूपी आमलेट को तैयार किया जाए। रूसो ने सामान्य इच्छा के सिद्धान्त द्वारा इस समस्या के समाधान का प्रयास किया है।

रूसो द्वारा प्रतिपादित सामाजिक समझौता सिद्धान्त के अनुसार आदिम मनुष्य पशुतुल्य, निष्पाप, निर्दोष तथा स्वाभाविक रूप से अच्छा था। उसका जीवन पशुओं जैसा व एकाकी था। रूसो के अनुसार प्राकृतिक मनुष्य एकाकी, स्वतन्त्र, नैतिक तथा अनैतिक भावनाओं से मुक्त, सम्पत्ति तथा परिवार से रहित आदिम स्वर्णयुग की स्वर्गीय दशा में रहता था। प्राकृतिक अवस्था आदर्श अवस्था थी, लेकिन कृषि के आविष्कार के कारण सम्पत्ति और 'मेरे-तेरे' की भावना का विकास हुआ जिससे प्राकृतिक शान्तिमय जीवन नष्ट हो गया तथा युद्ध, संघर्ष और विनाश का वातावरण उत्पन्न हुआ। इस असहनीय स्थिति से छुटकारा पाने के लिए सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित हुए और उनके द्वारा अपने सम्पूर्ण अधिकारों का समर्पण किया गया। समझौते के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण समाज की एक सामान्य इच्छा उत्पन्न होती है और सभी व्यक्ति इस सामान्य इच्छा के अन्तर्गत रहते हुए कार्यरत रहते हैं। दूसरे शब्दों में, रूसो सामाजिक समझौते द्वारा निर्मित राज्य को 'सामान्य इच्छा' (General Will) कहता है।

रूसो के सम्पूर्ण दर्शन में सामान्य इच्छा का सिद्धान्त उसका मौलिक योगदान है। रूसो के इस क्रान्तिकारी सिद्धान्त ने राजदर्शन में हलचल उत्पन्न कर दी। जोन्स के शब्दों में, "सामान्य इच्छा का सिद्धान्त रूसो के चिन्तन का न केवल केन्द्र बिन्दु है अपितु यह अत्यन्त मौलिक, दिलचस्प और ऐतिहासिक दृष्टि से राजनीतिक सिद्धान्त को उसका महत्वपूर्ण योगदान है।"[i] शायद ही कोई सिद्धान्त इतना विवादास्पद रहा हो जितना कि सामान्य इच्छा का सिद्धान्त। एक ओर तो लोकतन्त्र के समर्थकों ने मुक्त हृदय से इसका स्वागत कर इसे प्रजातन्त्र का आधार स्तम्भ बनाया और दूसरी ओर निरंकुश शासकों ने इसका दामन पकड़कर जनता पर मनमाने अत्याचार किए।

सामान्य इच्छा क्या है?—सामान्य इच्छा क्या होती है, इसे समझने के लिए रूसो द्वारा प्रतिपादित मानव इच्छा के विश्लेषण को समझना आवश्यक है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। किसी न किसी प्रकार के विचार या इच्छाएं उसके हृदय में सदा उठती रहती हैं। मनुष्य की ये इच्छाएं सामान्यतः दो प्रकार की होती हैं—प्रथम, यथार्थ तथा द्वितीय, आदर्श इच्छाएं।

यथार्थ इच्छा (Actual Will)—सामान्यतया यथार्थ इच्छा और आदर्श इच्छा का एक ही अर्थ लिया जाता है, परन्तु रूसो के द्वारा इनका प्रयोग विशेष अर्थों में किया गया है।

रूसो के अनुसार मनुष्य की यथार्थ इच्छा स्वार्थ प्रधान होती है। वह मनुष्य की अविवेकपूर्ण संकीर्ण प्रवृत्ति का परिणाम होती है, स्वार्थ तथा वैयक्तिक हित को दृष्टि में रखती है तथा सामाजिक हित का विचार नहीं करती। उदाहरणार्थ, खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वाले व्यापारी का लक्ष्य केवल लाभ कमाने का विचार होता है, वह इससे समाज को पहुंचने वाली हानि को कभी नहीं देखता। संक्षेप में, यथार्थ इच्छा संकुचित, अविवेकपूर्ण, अस्थाई और क्षणिक इच्छाएं होती हैं। डॉ. आशीवार्दम् के शब्दों में, "यह व्यक्ति की समाज विरोधी इच्छा है, क्षणिक एवं तुच्छ इच्छा है। यह संकुचित तथा स्वविरोधी है।"

आदर्श इच्छा (Real Will)—मनुष्य की आदर्श इच्छा उसके व्यापक दृष्टिकोण का परिणाम होती है। यह सामाजिक हित से सम्बद्ध होने के कारण अस्थाई और क्षणिक नहीं होती। यह मनुष्य की बुद्धि के चिन्तन का परिणाम और वैयक्तिक स्वार्थ से रहित होने के कारण व्यक्ति की वास्तविक इच्छा होती है। संक्षेप में, दृष्टिकोण की व्यापकता, दूरदर्शिता, स्थायित्व, व्यक्ति व समाज के हित का सामंजस्य, पूर्णता व विवेकशीलता व्यक्ति की आदर्श इच्छा की विशेषताएं होती हैं। डॉ. आर्शीवादम् के शब्दों में, "यह जीवन के समस्त पहलुओं पर व्यापक रूप में दृष्टिपात करती है। यह विवेकपूर्ण इच्छा है। यह व्यक्ति तथा समाज के सामंजस्य में प्रदर्शित होती है।"

Scanned with CamScanner

सामान्य इच्छा (General Will)—समाज के विभिन्न व्यक्तियों की आदर्श इच्छा (Real Will) का सर्वयोग ही सामान्य इच्छा है। रूसो की मान्यता है कि सब नागरिकों की वह इच्छा जिसका उद्देश्य सामान्य हित हो, सामान्य इच्छा कहलाती है। "यह सब व्यक्तियों में से आनी चाहिए तथा सब व्यक्तियों पर लागू होनी वाहिए (It must both come from all and apply to all)। सामान्य इच्छा की व्याख्या करते हुए बोसांके ने कहा कि "सामान्य इच्छा सम्पूर्ण समाज की सामूहिक अथवा सभी व्यक्तियों की ऐसी इच्छाओं का समूह होता है जिनका लक्ष्य सामान्य हित हो।" ग्रीन के अनुसार यह "सामान्य हित की सामान्य चेतना है।" वेपर के अनुसार "सामान्य इच्छा नागरिकों की वह इच्छा है जिसका लक्ष्य सबकी भलाई है, व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं। यह सबकी भलाई के लिए सबकी आवाज है।"

अतः सामान्य इच्छा की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। यह एक भाव है जो समझा जा सकता है, किन्तु व्यवहार में नहीं लाया जा सकता। किसी इच्छा को सामान्य इच्छा होने के लिए यह आवश्यक है कि वह सामान्य व्यक्तियों की इच्छा हो और उसका आधार सामान्य हित हो। अर्थात् सामान्य इच्छा के दो अंग हैं : प्रथम, सामान्य व्यक्तियों की इच्छा, और द्वितीय, सामान्य हित पर आधारित विवेकशील इच्छा।

सामान्य इच्छा का निर्माण—प्रत्येक व्यक्ति में दोनों प्रकार की—यथार्थ और आदर्श इच्छाएं होती हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति हर सार्वजनिक प्रश्न पर अपने ढंग से विचार करता है, परन्तु यदि समाज सभ्य है और उसमें नागरिकता की भावना मौजूद है तो व्यक्तियों की इच्छाओं के स्वार्थपूर्ण तत्व एक-दूसरे को नष्ट कर देते हैं और ऐसा हो जाने पर सामान्य इच्छा बन जाती है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यक्ति में स्वार्थी और सामाजिक इच्छाओं में प्रायः विरोध होता रहता है। जब स्वार्थी इच्छाएं नष्ट हो जाती हैं तो सामाजिक इच्छाएं शेष रहती हैं। सभी व्यक्तियों की इन सामाजिक इच्छाओं के मिश्रण से सामान्य इच्छा का निर्माण होता है।

सामान्य इच्छा तीन दृष्टियों से सामान्य होनी चाहिए :

1. उद्गम की दृष्टि से—इसमें सब नागरिकों की सहमति होनी चाहिए।
2. क्षेत्र की दृष्टि से—यह राज्य की समस्त जनता से सम्बन्धित होनी चाहिए।
3. ध्येय की दृष्टि से—यह समाज के हित के अनुकूल होनी चाहिए।

सामान्य इच्छा की विशेषताएं—रूसो की सामान्य इच्छा सम्बन्धी धारणा की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

1. **अखण्डता**—सामान्य इच्छा एक संगठित इकाई होती है और उसके कोई खण्ड नहीं हो सकते। यह अखण्ड है क्योंकि सामान्य होने के कारण यह कई अंशों में विभाजित नहीं की जा सकती है। यह एकत्व वाली होती है तथा राज्य को एकता के सूत्र में पिरोती है। रूसो ने कहा है : "सामान्य इच्छा राष्ट्रीय चरित्र में एकता उत्पन्न करती है और उसे स्थिर रखती है।"

2. **सम्प्रभुता**—सामान्य इच्छा सर्वोच्च और सम्प्रभु होती है। इस पर किसी प्रकार के दैवी और प्राकृतिक नियमों का प्रतिबन्ध नहीं होता। यही कानून का निर्माण करती है, धर्म का निरूपण करती है एवं नैतिक और सामाजिक जीवन को संचालित करती है। रूसो के शब्दों में "जो कोई सामान्य इच्छा का पालन नहीं करता, वह आज्ञा पालन के लिए समस्त समाज द्वारा बाध्य किया जा सकता है। इसका अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं है कि उसे स्वतन्त्र होने के लिए बाध्य किया जाए।"[1]

3. **अदेयता**—सामान्य इच्छा अदेय है अर्थात् यह इच्छा किन्हीं व्यक्तियों को हस्तान्तरित नहीं की जा सकती है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति के शरीर से उसके प्राण को पृथक् नहीं किया जा सकता है, उसे किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता, वैसे ही प्रभुसत्ता को सामान्य इच्छा से अलग करना सम्भव नहीं है।

4. **अप्रतिनिधित्व**—सामान्य इच्छा प्रतिनिधियों द्वारा अभिव्यक्त किए जाने योग्य नहीं है।[2] रूसो ने कहा है कि जब कोई राष्ट्र प्रतिनिधियों को नियुक्त करता है तब वह स्वतन्त्र नहीं रह जाता, अपना अस्तित्व कायम नहीं कर सकता।[3] उसके अनुसार तो संसद के सदस्यों के केवल निर्वाचन के समय ही इंग्लैण्ड की जनता

Scanned with CamScanner

स्वतन्त्र होती है, निर्वाचनों के बाद जनता दास और नगण्य बन जाती है।[1] वस्तुतः रूसो प्रत्यक्ष लोकतन्त्र का उपासक है, इसमें सब व्यक्ति अपनी इच्छा को स्वयमेव अभिव्यक्त करते हैं।

5. **अचूक**—सामान्य इच्छा अचूक (Infalliable) है, क्योंकि यह सभी व्यक्तियों की आदर्श इच्छाओं का सामूहिक रूप है इसलिए वह सदा न्यायसंगत है और उचित है।[2]

6. **स्थायी**—सामान्य इच्छा किसी प्रकार से भावात्मक आवेगों, आवेगों या सनक का परिणाम नहीं होती अपितु मानव के जनकल्याण की स्थायी प्रवृत्ति और विवेक का परिणाम होती है। व्यक्तियों के विवेक पर आधारित होने के कारण उसमें परिवर्तन नहीं होता।

7. **लोक कल्याणकारी**—सामान्य इच्छा की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता उसका लोक कल्याणकारी होना है। सामान्य इच्छा का ध्येय समाज के किसी अंग का कल्याण न होकर सम्पूर्ण समाज का कल्याण होता है।

8. **विवेक पर आधारित**—सामान्य इच्छा किसी प्रकार की भावनाओं पर नहीं वरन् तर्क तथा विवेक पर आधारित होती है। यह हमेशा उचित और सही होती है क्योंकि हमेशा पूरे समाज के कल्याण से प्रेरित होती है।

9. **कानून द्वारा अभिव्यक्त**—रूसो की सामान्य इच्छा सामान्य कानून द्वारा अपने को व्यक्त करती है, किसी अन्य माध्यम द्वारा नहीं।[3]

10. **निरंकुश**—सामान्य इच्छा सर्वोच्च व निरंकुश होती है। इसके ऊपर समाज की कोई अन्य शक्ति नहीं हो सकती। इसकी आज्ञा का पालन सबके लिए अनिवार्य है।

रूसो द्वारा प्रतिपादित सामान्य इच्छा की उपर्युक्त विशेषताओं से '**सामान्य इच्छा**' अवधारणा की प्रकृति को समझने में सहायता मिलती है। इन विशेषताओं के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं :

1. राजनीतिक संगठन या राज्य को एक संगठित शरीर या विराट् पुरुष मानना चाहिए। इसमें अन्य सावयवों की भांति सावयवी एकता (Organic Unity) होती है।
2. यह राजनीतिक संगठन या विराट् पुरुष नैतिक प्राणी होता है, इसकी अपनी इच्छा होती है।
3. यह सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहती है।
4. यह सब कानूनों और विधियों का मूल स्रोत है।
5. यह अपने राज्य के सब सदस्यों के लिए न्याय और अन्याय का निर्धारण करती है।
6. यह सदैव सही और सार्वजनिक हित का पोषण करने वाली होती है।
7. सामान्य इच्छा ही उस समाज या राज्य की सम्प्रभु (Sovereign) है। सम्प्रभु होने के कारण सामान्य इच्छा की सभी आज्ञाओं का पालन करना समाज के सभी व्यक्तियों के लिए आवश्यक है।

सामान्य इच्छा और बहुमत—रूसो की सामान्य इच्छा बहुमत से भिन्न है। सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति में संख्या का कोई मूल्य नहीं है। वह किसी एक या कुछ व्यक्तियों की इच्छा भी हो सकती है। यदि समाज का एक बहुसंख्यक वर्ग अपने अनुचित निर्णयों को अल्पसंख्यक वर्ग पर थोपने का प्रयत्न करे तो उसके इस कार्य को समाज की सामान्य इच्छा का प्रतीक नहीं माना जा सकता।

सामान्य इच्छा और सर्वसम्मति—सामान्य इच्छा व सर्वसम्मति में अन्तर करते हुए रूसो ने लिखा है कि प्रथम का लक्ष्य सार्वजनिक होता है जबकि द्वितीय का लक्ष्य वैयक्तिक हित होता है। सर्वसम्मति समाज के सब व्यक्तियों की इच्छा होती है, जबकि सामान्य इच्छा एक व्यक्ति, कुछ व्यक्तियों या सब व्यक्तियों द्वारा व्यक्त इच्छा भी हो सकती है। सर्वसम्मति व्यक्तियों के हितों से भी सम्बन्धित हो सकती है, पर सामान्य इच्छा अनिवार्यतः समस्त समाज के कल्याण से ही सम्बन्धित होती है।[4]

Scanned with CamScanner

सामान्य इच्छा और लोकमत—सामान्य इच्छा व लोकमत को भी एक नहीं समझना चाहिए। लोकमत का रूप कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है जिसका सम्बन्ध समाज के हित से नहीं हो, पर सामान्य इच्छा सदा समाज के स्थायी हित का ही प्रतिनिधित्व करती है। समाचार पत्र, रेडियो आदि प्रचार साधनों द्वारा लोकमत को भ्रष्ट किया जा सकता है पर सामान्य इच्छा कभी विकृत नहीं होती।

सामान्य इच्छा सिद्धान्त की आलोचना—रूसो की सामान्य इच्छा का सिद्धान्त राजनीतिक दर्शन के सर्वाधिक विवादास्पद विषयों में से एक है। इस सिद्धान्त में कतिपय गम्भीर दोष हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. **सिद्धान्त की अस्पष्टता**—सामान्य इच्छा का सिद्धान्त अस्पष्ट है। कभी रूसो कहता है कि सामान्य इच्छा और सभी की इच्छा में महान् अन्तर है; कहीं-कहीं पर उसने बहुमत की इच्छा को ही सामान्य मान लिया है। बहुत कुछ तो रूसो ने भावावेश में आकर लिख दिया जो तर्क की दृष्टि से युक्ति-संगत नहीं। उसकी सामान्य इच्छा के सिद्धान्त में पग-पग पर अस्पष्टता, विरोधाभास तथा अन्तर्विरोध भरा पड़ा है। वेपर के अनुसार "जब रूसो ही हमको सामान्य इच्छा का पता नहीं दे सका तो इस सिद्धान्त के प्रतिपादन का लाभ ही क्या हुआ? रूसो ने हमें एक ऐसे अन्धकार में छोड़ दिया है जहां हम सामान्य इच्छा के बारे में अच्छी तरह सोच भी नहीं सकते।"

2. **सामान्य इच्छा अनैतिहासिक तथा काल्पनिक है**—रूसो की 'सामान्य इच्छा' उसकी काल्पनिक उड़ान है। इतिहास में इस प्रकार के समझौते का वर्णन नहीं मिलता जैसा रूसो ने चित्रित किया है।

3. **यथार्थ और आदर्श इच्छा का काल्पनिक भेद**—रूसो ने व्यक्ति की इच्छाओं को दो भागों में बांटा है—यथार्थ इच्छा तथा आदर्श इच्छा। वास्तव में इच्छाओं का इस प्रकार का विभाजन सम्भव नहीं। व्यक्ति की इच्छा ऐसी जटिल, पूर्ण, अविभाज्य समष्टि है कि उसका यह विभाजन सम्भव नहीं है।

4. **सामान्य इच्छा निरंकुशता को प्रोत्साहन देती है**—सामान्य इच्छा अधिनायकवाद तथा सर्वाधिकारवाद की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देती है। रूसो कहता है कि कानून इस सामान्य इच्छा के द्वारा ही बनाए जाते हैं। सामान्य इच्छा का कोई भी व्यक्ति उल्लंघन नहीं कर सकता। सामान्य इच्छा के नाम पर शासक द्वारा व्यक्ति पर मनमाने अत्याचार किए जा सकते हैं। जोन्स ने लिखा है कि "रूसो के सामान्य इच्छा विषयक सिद्धान्त में कुछ ऐसे अस्थिर तत्व हैं जो उसे जनतन्त्र के समर्थन से हटाकर निरंकुश शासन के समर्थन की ओर ले जाते हैं।" डाइड के शब्दों में, "रूसो सामान्य इच्छा की आड़ में बहुमत की निरंकुशता का प्रतिपादन तथा समर्थन करता है।" वाहन के अनुसार "रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धान्त हॉब्स का सिरविहीन लेवियाथन है।"

5. **सार्वजनिक हित की परिभाषा करना कठिन**—सामान्य इच्छा का विचार सार्वजनिक हित के विचार पर आधारित है, लेकिन सार्वजनिक हित की परिभाषा करना अत्यन्त कठिन है। एक निरंकुश तानाशाह भी अपने कार्यों को सार्वजनिक हित के नाम पर उचित ठहरा सकता है।

6. **सामान्य इच्छा व्यक्ति की महत्ता को नष्ट कर देती है**—सामान्य इच्छा से व्यक्ति की स्वतन्त्रता का हनन होता है। सामान्य इच्छा के सामने व्यक्ति की इच्छा को कोई महत्व नहीं दिया गया है। रूसो सामान्य इच्छा की अवज्ञा करने वाले को इसके पालन के लिए बाध्य करता है। स्वतन्त्र होने के लिए बाध्य करना एक विचित्र तर्क है। इसी प्रकार का तर्क, जैसा सेबाइन ने लिखा है, "रूसो के दर्शन में और उसके बाद हीगल के दर्शन में सन्दिग्ध शब्दजाल के साथ एक खतरनाक परीक्षण है....।"

7. **छोटे राज्यों के लिए ही उपयुक्त**—सामान्य इच्छा का सिद्धान्त केवल छोटे राज्यों में ही सफल हो सकता है क्योंकि यहां पर जनसंख्या के कम होने पर सामान्य इच्छा का पता आसानी से लगाया जा सकता है। आधुनिक युग के बड़े राज्यों में जिनमें बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के जनसमूह निवास करते हैं, सामान्य हित पर आधारित इच्छा का पता लगाना कठिन ही नहीं असम्भव है। अतः यह बड़े राज्यों के लिए उपयुक्त नहीं है।

8. **प्रतिनिध्यात्मक प्रजातन्त्र में सम्भव नहीं**—रूसो का विचार है कि सामान्य इच्छा की सिद्धि के लिए सभी व्यक्तियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रभुसत्ता के प्रयोग में सक्रिय भाग लिया जाना चाहिए। इस शर्त का पालन प्राचीन यूनानी नगर राज्यों में भले ही सम्भव हो, आधुनिक समय के प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्रों में कतई सम्भव नहीं हो सकता। रूसो द्वारा प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त का यह तिरस्कार अन्तिम रूप में लोकतन्त्र का ही

Scanned with CamScanner

तिरस्कार हो जाता है क्योंकि वर्तमान समय में प्रतिनिध्यात्मक शासन ही लोकतन्त्र का एकमात्र व्यावहारिक रूप है।

सामान्य इच्छा सिद्धान्त का महत्व—विभिन्न दोषों के उपरान्त भी रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धान्त राजनीतिक विचारों के क्षेत्र में असाधारण महत्व रखता है।

1. सामान्य इच्छा का विचार लोकतन्त्र का पोषक है क्योंकि यह प्रभुसत्ता का आधार जनस्वीकृति मानता है।

2. इसने यह प्रतिपादित किया कि राज्य का उद्देश्य किसी वर्ग विशेष का नहीं, किन्तु समूचे समाज का कल्याण और जनता का हित सम्पादन करना होना चाहिए, सामाजिक और सामान्य हित वैकल्पिक हितों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट हैं।

3. रूसो के सिद्धान्त ने आदर्शवादी विचारधारा को प्रेरणा प्रदान की है क्योंकि इसने यह प्रतिपादित किया है कि 'शक्ति नहीं वरन् इच्छा राज्य का आधार है।'

4. यह सिद्धान्त व्यक्ति तथा समाज में शरीर तथा उसके अंगों के समान सम्बन्ध स्थापित करके सामाजिक स्वरूप को सुदृढ़ करता है।

5. यह सिद्धान्त यह भी घोषित करता है कि राज्य कृत्रिम न होकर एक स्वाभाविक संस्था है। कोल के अनुसार यह हमें सिखाता है कि राज्य मनुष्य की प्राकृतिक आवश्यकताओं और इच्छाओं पर आधारित है, इसलिए राज्य के प्रति हमें आज्ञाकारी होना चाहिए क्योंकि यह हमारे व्यक्तित्व का ही स्वाभाविक विस्तार है।

संक्षेप में, रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धान्त राज्य के आंगिक स्वरूप का बोध कराता है और सार्वजनिक हितों को वैयक्तिक हितों की अपेक्षा उत्कृष्ट मानता है। रूसो ने सामान्य इच्छा द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि लोकतान्त्रिक संरचना ही लोकतन्त्र की आत्मा नहीं होती। नैतिकता, न्याय और सद्गुण के अभाव में लोकतान्त्रिक संस्थाएं महत्वहीन हैं। राजनीतिक चिन्तन के सैद्धान्तिक इतिहास में ही नहीं बल्कि व्यावहारिक राजनीति पर भी रूसो की सामान्य इच्छा के सिद्धान्त का गम्भीर प्रभाव पड़ा है। यदि किसी व्यक्ति को फ्रेन्च क्रान्ति के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है तो वह रूसो ही है। उसके ग्रन्थ न केवल फ्रेन्च क्रान्तिकारियों के लिए, अपितु उसके बाद यूरोप के अन्य देशों में होने वाली क्रान्तियों के लिए प्रबल प्रेरणा का स्रोत रहे हैं।

रूसो की प्रभुसत्ता सम्बन्धी धारणा

(ROUSSEAU'S CONCEPT OF SOVEREIGNTY)

रूसो ने सम्प्रभुता को सामान्य इच्छा में निहित माना है। बोदां तथा हॉब्स ने प्रभुसत्ता के विचार से राजा की निरंकुश सत्ता को पुष्ट किया था, रूसो की यह विशेषता है कि उसने इससे जनता की सत्ता का समर्थन किया। रूसो के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सम्प्रभुता का भागीदार है, अतः सम्प्रभुता सम्पूर्ण समाज में निहित है, वह सर्वोच्च शक्ति है। उसके विरुद्ध किसी को भी विद्रोह करने का अधिकार नहीं है। वस्तुतः रूसो ने जनता की सत्ता का प्रतिपादन करके 'लोकप्रिय सम्प्रभुता के सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया।

रूसो की प्रभुसत्ता की निम्नलिखित विशेषताएं हैं—पहली विशेषता अविच्छेद्यता है। चूंकि सामान्य इच्छा के रूप में यह जनता में रहती है, अतः यह कभी उससे पृथक् नहीं हो सकती है। दूसरी विशेषता इसका प्रतिनिधित्व न हो सकना है। चूंकि यह जनता में सामूहिक रूप से निवास करती है, अतः कोई भी व्यक्ति इसका समूचे रूप में कभी प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। तीसरी विशेषता इसका असीम और अमर्यादित होना है अर्थात् इस पर किसी प्रकार के प्रतिबन्ध नहीं लगाए जा सकते हैं। चौथी विशेषता इसका सब कानूनों का मूल स्रोत होना है अर्थात् राज्य के सब कानून इससे ही उत्पन्न होते हैं। पंचम विशेषता अविभाज्यता है—अर्थात् समूची जनता में इसका निवास होने के कारण इसका विभाजन सम्भव नहीं है।

इस प्रकार रूसो ने जनता की असीम, मर्यादित अनन्यक्राम्य और अविभाज्य प्रभुसत्ता का प्रतिपादन किया है। उसके सम्प्रभुता के सिद्धान्त में हॉब्स और लॉक दोनों के विचारों का समन्वय है। अरनेस्ट रीज के शब्दों में "रूसो हॉब्स की निरंकुश प्रभुसत्ता के विचार को लॉक के जन सहमति के विचार से समन्वित करके जनप्रभुसत्ता के दार्शनिक सिद्धान्त का निर्माण करता है।"

Scanned with CamScanner

रूसो के शासन सम्बन्धी विचार
(ROUSSEAU'S THINKING ON GOVERNMENT)

रूसो ने राज्य और शासन (सरकार) में स्पष्ट अन्तर किया है। सामाजिक समझौते से जो निकाय बनता है उसे वह **राज्य** कहकर पुकारता है। इस सम्प्रभु निकाय की इच्छा को क्रियात्मक रूप देने के लिए **सरकार** का निर्माण किया जाता है। सरकार का निर्माण सामाजिक समझौते द्वारा नहीं अपितु सम्प्रभुता सम्पन्न समुदाय के प्रत्यादेश द्वारा होता है। अतः सरकार सम्प्रभु का एजेन्ट मात्र होती है जिसे जन समुदाय अपनी इच्छा के अनुसार सीमित, नियन्त्रित और परिवर्तित कर सकता है। रूसो के शब्दों में "राज्य प्रभुत्व शक्ति सम्पन्न और सर्वोच्च है जबकि सरकार सम्प्रभु राज्य तथा प्रजाजनों के मध्य निर्मित वह संगठन है जो उनके पारस्परिक सम्बन्धों का नियमन करता है, सम्प्रभु द्वारा निर्मित कानून को लागू करता है तथा राजनीतिक और नागरिक स्वतन्त्रता को बनाए रखता है।"

रूसो के अनुसार सरकार का काम केवल शासन करना है, कानून बनाने का कार्य सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न विधायिका का है। सरकार सम्प्रभु जनता की सेवक मात्र है और वह सम्प्रभु द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग कर सकती है। जनता अपनी इच्छानुसार उसकी शक्ति को मर्यादित या संशोधित कर सकती है या चाहने पर उसे वापस भी ले सकती है।

शासन का वर्गीकरण—रूसो ने चार प्रकार की शासन प्रणालियां मानी हैं—राजतन्त्र, कुलीनतन्त्र, प्रजातन्त्र और मिश्रित शासन। उसने व्यावहारिक कारणों से लोकतन्त्र की आलोचना की है। वह प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्र का घोर विरोधी था। उसका झुकाव प्रत्यक्ष लोकतन्त्र की ओर है और इसलिए वह प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्र को सच्चा लोकतन्त्र नहीं मानता। इंग्लैण्ड के सम्बन्ध में उसकी राय थी कि उसकी जनता निर्वाचन के समय ही स्वतन्त्र होती है, शेष अवधि में वह दासता की स्थिति में रहती है। रूसो जनतन्त्र की भी आलोचना करता है क्योंकि उसमें उत्तराधिकार की समस्या बन रहती है। वह कुलीनतन्त्र को श्रेष्ठ शासन प्रणाली मानता है। उसने कुलीनतन्त्र के तीन प्रकार माने हैं। प्राकृतिक, वंशानुगत तथा निर्वाचनात्मक। निर्वाचित कुलीनतन्त्र को वह सर्वोत्तम शासन व्यवस्था कहता है।

माण्टेस्क्यू की भांति रूसो का मत था कि भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियां किसी देश की शासन प्रणाली पर गहरा प्रभाव डालती हैं। कृषिप्रधान तथा औद्योगिक देशों की शासन प्रणालियां सर्वथा भिन्न होंगी।

रूसो शासन की सफलता की कसौटी जनसंख्या में वृद्धि मानता है। उसके अनुसार जनसंख्या की वृद्धि राष्ट्र की प्रगति की परिचायक है। वह शासन की शक्तियों की वृद्धि के खिलाफ था। उसकी इस धारणा से कि निश्चित अवधि के बाद संविधान पर पुनर्विचार करने के लिए लोकसभाएं बुलाई जाएं, संविधान सभाएं बुलाने की प्रथा प्रारम्भ हुई।

रूसो के कानून सम्बन्धी विचार
(ROUSSEAU'S VIEWS ON LAW)

रूसो के अनुसार सम्प्रभु कानून का निर्माता है। रूसो के अनुसार **सम्प्रभुता** सामान्य इच्छा में निहित है इसलिए '**सामान्य इच्छा**' ही कानून का स्रोत है। रूसो कानून को सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति मानता है। वह कहता है—"एक कानून सम्पूर्ण जनता के लिए प्रस्ताव है, जिसका सम्बन्ध ऐसे विषयों से होता है जिनका सम्बन्ध सबसे होता है।" इस तरह रूसो के अनुसार कानून के लिए दो बातें आवश्यक हैं। प्रथम, कानून सामान्य हित से सम्बन्धित होना चाहिए और द्वितीय, उसका स्रोत सम्पूर्ण जनता होनी चाहिए।

रूसो ने कानूनों के चार प्रकार बतलाए हैं—(1) संवैधानिक कानून, (2) दीवानी कानून, (3) फौजदारी कानून, तथा (4) परम्परागत कानून। संवैधानिक कानून वे कानून हैं जो सम्प्रभु और राज्य के साथ सम्बन्धों का निर्धारण करते हैं। नागरिकों के पारस्परिक सम्बन्धों को नियन्त्रित करने वाले कानून दीवानी कानून कहे जाते हैं। जो कानून आदेशोल्लंघन के लिए दण्ड की व्यवस्था करते हैं वे फौजदारी कानून हैं। रूसो ने परम्परागत कानून उन कानूनों को कहा है जो प्रथा या परम्परा के रूप में मनुष्यों के आचार-विचार को प्रभावित करते हैं।

Scanned with CamScanner

रूसो ने कानून निर्माण के लिए एक विधि निर्माता (Legislator) की आवश्यकता प्रतिपादित की है। चूंकि कानून निर्माण की प्रक्रिया बड़ी जटिल होती है और साधारण जनता इतनी प्रबुद्ध नहीं होती कि वह कानून बना सके और इसलिए कानून निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन करने के लिए एक विधि निर्माता (Legislator) की आवश्यकता होती है। विधि निर्माता में असाधारण प्रतिभा होती है जिससे वह विधिनिर्माण में जनता का मार्ग प्रशस्त करता है।

रूसो के अनुसार कानून का सभी व्यक्तियों द्वारा पालन किया जाना चाहिए क्योंकि वह हमारे आन्तरिक संकल्प की अभिव्यक्ति करता है। अतः स्वतन्त्रता और कानून की आज्ञाकारिता में कोई विरोध नहीं है। इस ओर संकेत करते हुए वह कहता है कि, ''सच्ची स्वतन्त्रता उन कानूनों का पालन करने में है जिन्हें हम स्वयं अपने लिए निर्धारित करते हैं।''

रूसो के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचार
(ROUSSEAU ON LIBERTY)

रूसो स्वतन्त्रता का मसीहा है। उसने बड़ी ओजस्वी भाषा में स्वतन्त्रता का गुणगान किया है। उसने कहा कि स्वतन्त्रता मनुष्य का परम आन्तरिक तत्व है। अर्थात् वह स्वतन्त्रता को मानव का आवश्यक गुण मानता है। स्वतन्त्रता मनुष्य को नैतिक बनाती है और उसमें उत्तरदायित्व की भावना जागृत करती है।

रूसो के अनुसार स्वतन्त्रता का अर्थ मनमाना कार्य करना नहीं है। सामान्य इच्छा द्वारा निर्मित कानूनों का पालन ही स्वतन्त्रता है। सामान्य इच्छा के अधीनस्थ रहकर ही मनुष्य स्वतन्त्र रह सकता है। सामान्य इच्छा द्वारा निर्मित कानून का अर्थ है स्वनिहित कानून और इसी स्वनिहित कानून के पालन में स्वतन्त्रता निहित है।[1] संक्षेप में,रूसो ने स्वतन्त्रता का सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। रूसो इस बात में विश्वास करता है कि कानून के अनुसार जीवन व्यतीत करना ही सच्ची स्वतन्त्रता है क्योंकि ऐसा करके व्यक्ति अपनी इच्छा का ही पालन करता है।

रूसो के दर्शन में स्वतन्त्रता का विशिष्ट महत्व है। 'सोशल कान्ट्रेक्ट' का आरम्भ इस प्रसिद्ध वाक्य के साथ होता है—'मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है और वह सर्वत्र शृंखलाओं में जकड़ा हुआ है।' इसका अर्थ है मनुष्य को स्वतन्त्र होना चाहिए;प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य स्वतन्त्र था;आज मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है क्योंकि अधिकांश राज्य सामान्य इच्छा पर आधारित न होकर शक्ति पर आधारित हैं।

स्वतन्त्रता का उपासक होने के कारण रूसो ने दास प्रथा की आलोचना की तथा स्वतन्त्र राष्ट्रों को यह सन्देश दिया कि ''स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकती है, परन्तु दुबारा हस्तगत कभी नहीं की जा सकती।'' स्वतन्त्रता का पुजारी होने के कारण ही उसने प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र का समर्थन किया। रूसो के अभिमत में जैसे ही कोई राष्ट्र अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त करता है, वह अपनी स्वतन्त्रता खो देता है। स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए ही उसने सत्ता पर बल दिया है।

रूसो की हॉब्स से तुलना
(ROUSSEAU COMPARED WITH HOBBES)

अथवा

''रूसो का प्रभुसत्ताधारी हॉब्स का लेवियाथन है जिसका शीश काट दिया गया है''
(ROUSSEAU'S GENERAL WILL IS HOBBES'S LEVIATHAN WITH ITS HEAD CHOPPED OFF)

समझौतावादी विचारकों में हॉब्स, लॉक तथा रूसो का नाम उल्लेखनीय है। इन्हें राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक समझौता सिद्धान्त की नवीन परम्परा को विधिवत् जन्म देने और विकसित करने का श्रेय प्राप्त है। यद्यपि सामाजिक समझौते के विचार का वर्णन प्राचीन तथा मध्ययुगीन विचारकों के द्वारा भी किया गया था, लेकिन इसे एक सिद्धान्त की तरह तार्किक रूप से प्रतिपादन का श्रेय हॉब्स, लॉक तथा रूसो को ही प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

हॉब्स अपने सामाजिक समझौता सम्बन्धी विचारों के माध्यम से सम्प्रभुता के जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है उसे 'निरंकुश प्रभुसत्ता' (Absolutism) कहा जाता है। इसके विपरीत लॉक 'सीमित प्रभुसत्ता' (Limited Sovereignty) के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है और रूसो 'जन प्रभुसत्ता' (Popular Sovereignty) का प्रतिपादन करता है। ऐसा कहा जाता है कि हॉब्स की निरंकुश प्रभुसत्ता और रूसो की जन-प्रभुसत्ता की विशेषताएं लगभग समान हैं। ऐसी स्थिति में हॉब्स की भांति रूसो के राजदर्शन में भी निरंकुशतावाद के तत्व दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

हॉब्स का लेवियाथन अथवा हॉब्स के राजदर्शन में निरंकुशतावाद के तत्व (Hobbes's Leviathan or Absolutism in Hobbes)—हॉब्स ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लेवियाथन' में अपने सामाजिक समझौता सम्बन्धी चिन्तन का प्रतिपादन किया है। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1651 में हुआ। बाईबिल के कथनानुसार यह (लेवियाथन) एक समुद्री राक्षस है, किन्तु हॉब्स इसका प्रयोग प्राकृतिक दशा की अराजकता और मत्स्य न्याय का अन्त करने की दृष्टि से मनुष्यों द्वारा किए गए समझौतों से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न राजशक्ति के लिए करता है। उसने अपने ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर इसे सब मनुष्यों से मिलकर बनने वाले एक विराट पुरुष या महामानव के रूप में चित्रित किया है। महामानव या लेवियाथन की सारी देह छोटे-छोटे मनुष्यों से भरी हुई है जो यह सूचित करती है कि सबने इसे अपने अधिकार देकर सामाजिक समझौते से सम्पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न लेवियाथन का निर्माण किया है। मुखपृष्ठ के ऊपरी आधे हिस्से में यह दिखाया गया है कि एक सुव्यवस्थित रीति से बसाए गए नगर और पहाड़ के पीछे लेवियाथन के रूप में मुकुट मंडित दाएं हाथ में तलवार तथा बाएं हाथ में धर्मदण्ड धारण किए हुए महामानव खड़ा हुआ है। इसका यह अर्थ है कि शासन और धर्म के दोनों क्षेत्रों में उसे सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है। कटि पर्यन्त दृष्टिगोचर होने वाली उसकी सारी देह उसकी ओर कृपा के लिए निहार रहे छोटे-छोटे मनुष्यों के चित्रों से ढकी हुई है। यह इस बात का प्रतीक है कि सब मनुष्यों ने समझौते के द्वारा अपनी शक्ति उसे समर्पित कर दी है तथा वे भक्तिभाव से नत-मस्तक होकर उसकी सब आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रस्तुत हैं। लेवियाथन के मस्तक पर ये प्रभावशाली शब्द अंकित हैं (Non est Potestas super terram quoe Compareturei) "भूतल पर इसके तुल्य शक्ति रखने वाला कोई दूसरा नहीं है।" हॉब्स ने अपने प्राक्कथन में लिखा है कि—यह महान् लेवियाथन ही राज्य है जो यद्यपि डीलडौल और शक्ति की दृष्टि से प्राकृतिक मनुष्य की अपेक्षा बड़ा है, पर स्वयं कृत्रिम मानव मात्र है और इसकी रचना प्राकृतिक मनुष्य की रक्षा के लिए हुई है।

Scanned with CamScanner

करना अनिवार्य है। सम्प्रभु शासक की शक्ति असीम है। वह किसी भी लौकिक उत्तरदायित्व से बाध्य नहीं है और उस पर संविधान, प्राकृतिक विधि और ईश्वरीय इच्छा का कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है। संक्षेप में, हॉब्स की प्रभुसत्ता की विशेषताएं हैं—अपरिमितता, निरपेक्षता, असीमितता आदि। हॉब्स का लेवियाथन अथवा सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न शासक पूर्णतः निरंकुश है। उसका आदेश ही कानून है। संक्षेप में, उसके राजदर्शन में निरंकुशतावाद के तत्व अत्यन्त प्रबल रूप से दिखलायी देते हैं। वह अपने राज्य में मनुष्यों को सर्वथा अधिकार शून्य करके लेवियाथन की दासता के पाश में जकड़ देता है। उसके राज्य में मनुष्यों की स्थिति लेवियाथन रूपी चरवाहे द्वारा हांके जाने वाले पशुओं के रेवड़ जैसी थी।

रूसो की सामान्य इच्छा अथवा रूसो के राजदर्शन में निरंकुशतावाद के तत्व

(ROUSSEAU'S GENERAL WILL OR ABSOLUTISM IN ROUSSEAU)

राजदर्शन में रूसो को स्वतन्त्रता, व्यक्तिवाद, जन सम्प्रभुता और लोकतन्त्र का प्रतिनिधि विचारक माना जाता है, किन्तु यह एक आश्चर्य की बात है कि अपनी 'सामान्य इच्छा' के सिद्धान्त द्वारा जन सम्प्रभुता का समर्थन करते-करते उसका चिन्तन निरंकुशतावाद में परिवर्तित हो जाता है।

रूसो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सोशल कान्ट्रेक्ट' में मानव स्वभाव का चित्रण करते हुए आदिम मनुष्य को पशुतुल्य, निष्पाप और आदर्श बर्बर (Noble Savage) बताया है। उसे नैतिकता के विचारों से रहित सहज भावना से काम करने वाला बुद्धिहीन प्राणी कहा है।

रूसो के मतानुसार प्राकृतिक अवस्था वर्तमान मनुष्य की सभ्य सामाजिक अवस्था से कहीं अधिक अच्छी थी। इस अवस्था में मनुष्य एकाकी, स्वतन्त्र, सम्पत्ति और परिवार से रहित स्वर्गीय अवस्था में रहता था। उसका जीवन उदात्त वनचर जैसा था, किन्तु यह स्थिति अधिक दिनों तक नहीं रही। सम्पत्ति रूपी सर्प ने इसमें प्रवेश किया और प्राकृतिक अवस्था की सुख-शान्ति को नष्ट कर दिया। धनी व निर्धन का भेद उत्पन्न हुआ। अमीरों ने निर्धनों पर अत्याचार और निर्धनों ने अमीरों के विरुद्ध षड्यन्त्र करने प्रारम्भ कर दिए। अन्त में इस दुर्व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिए व्यक्तियों ने अनुबन्ध के आधार पर राज्य की स्थापना की। सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित हुए और उनके द्वारा अपने समस्त अधिकारों का समर्पण किया गया, किन्तु अधिकारों का यह समर्पण किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं वरन् मानव समाज के लिए किया गया है। समझौते के परिणामस्वरूप वे सम्पूर्ण समाज की एक सामान्य इच्छा के अन्तर्गत रहते हुए कार्य करते हैं। रूसो के शब्दों में : "प्रत्येक अपने व्यक्तित्व और अपनी पूर्ण शक्ति को सामान्य प्रयोग के लिए, सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अधीन समर्पित कर देता है तथा एक समूह के रूप में हम में से प्रत्येक व्यक्ति समूह के अविभाज्य अंग के रूप में अपने व्यक्तित्व तथा अपनी पूर्ण शक्ति को प्राप्त कर लेता है।"

रूसो के सामाजिक समझौते से सामान्य इच्छा पर आधारित प्रभुत्व सम्पन्न समाज की स्थापना होती है। रूसो की सामान्य इच्छा की विशेषताएं हैं—अखण्डता, अदेयता, सर्वोच्चता, स्थायित्व, निरंकुशता आदि। रूसो के सिद्धान्त में जनता द्वारा अपने समस्त अधिकारों का समर्पण सामान्य इच्छा को कर दिया जाता है और जनता को किसी भी परिस्थिति में सामान्य इच्छा (राज्य) के विरोध का अधिकार नहीं है। इसीलिए जोन्स ने कहा है कि "रूसो के सामान्य इच्छा विषयक सिद्धान्त में कुछ ऐसे अस्थिर तत्व हैं जो उसे जनतन्त्र के समर्थन की ओर से हटाकर निरंकुश शासन के समर्थन की ओर ले जाते हैं।" डाइड के अनुसार, "रूसो सामान्य इच्छा की आड़ में बहुमत की निरंकुशता का प्रतिपादन तथा समर्थन करता है।"

रूसो का प्रभुसत्ताधारी हॉब्स का शीश विहीन लेवियाथन

(ROUSEAU'S GENERAL WILL IS HOBBES'S LEVIATHAN WITH ITS HEAD CHOPPED OFF)

वाहन के अनुसार "रूसो का प्रभुसत्ताधारी हॉब्स का लेवियाथन है जिसका मस्तक काट दिया गया है।"[1] स्वयं रूसो ने अपनी पुस्तक 'सोशल कान्ट्रेक्ट' के प्रथम संस्करण के मुखपृष्ठ पर कटे सिर वाले लेवियाथन का चित्र दिया था। इसका तात्पर्य है कि हॉब्स ने जो निरंकुश सत्ता **राजा** को प्रदान की, रूसो ने वही समस्त जनता अथवा सामान्य इच्छा को प्रदान की है।

Scanned with CamScanner

हॉब्स और रूसो की सम्प्रभुता सम्बन्धी धारणा में समानताएं—हॉब्स तथा रूसो के प्रभुसत्ता सम्बन्धी विचार बहुत कुछ सीमा तक एक से हैं। सामान्य इच्छा के जो लक्षण रूसो ने बताए हैं, वे लगभग वैसे ही हैं जिनका वर्णन हॉब्स ने अपने सम्प्रभु में किया है। अन्तर केवल यह है कि हॉब्स का सम्प्रभु एक मानव देव है और रूसो सम्प्रभु का निवास 'सामान्य इच्छा' में मानता है। इसलिए वाहन का यह कथन ठीक है कि 'यदि हॉब्स के मानव देव (लेवियाथन) का शीश काट दिया जाए तो वह रूसो की सामान्य इच्छा ही होगी।'

हॉब्स तथा रूसो के प्रभुसत्ताधारी की समानताएं इस प्रकार हैं :

1. हॉब्स की भांति रूसो भी राज्य (सामान्य इच्छा) को निरंकुश मानता है।
2. हॉब्स के लेवियाथन की भांति रूसो की सामान्य इच्छा सर्वोच्च और सम्प्रभु है।
3. हॉब्स के लेवियाथन की भांति सामान्य इच्छा अखण्ड है, संगठित इकाई है।
4. लेवियाथन की भांति सामान्य इच्छा सदैव न्यायसंगत है और उचित है।
5. लेवियाथन की भांति सामान्य इच्छा के ऊपर समाज की कोई अन्य शक्ति नहीं हो सकती। इसकी आज्ञा का पालन सबके लिए अनिवार्य है।
6. लेवियाथन की भांति सामान्य इच्छा कानूनों और विधियों का मूल स्रोत है।
7. हॉब्स की भांति रूसो भी इस बात का प्रतिपादन करता है कि राज्य का व्यक्तियों के सम्पूर्ण जीवन पर अधिकार होता है और व्यक्ति का मूल कर्तव्य राज्य की आज्ञाओं का पालन करना है। रूसो के अनुसार सामान्य इच्छा द्वारा निर्मित कानून के अनुसार आचरण करके ही मनुष्य पूर्णतः स्वतन्त्र हो सकता है। इसीलिए कहा गया है कि "वह अति निरंकुशतावादी है, 19वीं शताब्दी के जर्मन आदर्शवाद का अग्रदूत है" (He is the extreme absolutist the precursor of 19th century German idealism)। कांस्टेन्ट ने लिखा है कि 'वह सभी प्रकार के निरंकुश-तन्त्रों का सबसे भयंकर मित्र है' (He is the most terrible ally of despotism in all its forms)। ड्यूगिट के शब्दों में "रूसो जेकोबियन निरंकुशवाद और सीजरवादी तानाशाही का जनक और कान्ट व हीगल के निरंकुशतावादी सिद्धान्तों का प्रेरक है" ("J. J. Rousseau is the father of Jacobian despotism of Caesarian dictatorship and the inspirer of the absolutist doctrines of Kant and of Hegel.")

एक दृष्टि से तो रूसो का सम्प्रभु हॉब्स से भी अधिक निरंकुश है। हॉब्स राज्य को असीमित शक्ति प्रदान करते हुए व्यक्ति को आत्म रक्षा के अधिकार के हित में राज्य का विरोध करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देता है, लेकिन रूसो किसी भी स्थिति में व्यक्ति को राज्य का विरोध करने का अधिकार प्रदान नहीं करता। उसकी दृष्टि में सामान्य इच्छा व्यक्तियों की आदर्श इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए वह किसी भी स्थिति में गलत नहीं हो सकती है। स्वयं रूसो के अनुसार "जिस प्रकार प्रकृति ने मनुष्य के शरीर के विभिन्न अवयवों पर पूर्ण नियन्त्रण का अधिकार प्रदान किया है उसी प्रकार सामाजिक समझौते ने राजनीतिक सावयव (सामान्य इच्छा) को उसके शरीर के विभिन्न अवयवों (व्यक्तियों) के ऊपर पूर्ण निरंकुश अधिकार प्रदान किए हैं।"

हॉब्स और रूसो के निरंकुशतावादी चिन्तन में अन्तर—हॉब्स और रूसो के निरंकुशतावादी चिन्तन में निम्नलिखित अन्तर हैं

1. हॉब्स के समझौते से एक यान्त्रिक राज्य की स्थापना होती है जबकि रूसो के समझौते से एक आंगिक राज्य की।

2. हॉब्स का राज्य केवल शक्ति पर आधारित है जबकि रूसो का राज्य न्याय और नैतिकता पर।

3. हॉब्स का सम्प्रभु एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का समूह होता है जबकि रूसो का समस्त जन समुदाय।

4. हॉब्स का सम्प्रभु विधि निर्माता, कार्यपालक और न्यायाधीश सभी स्वयं होता है, परन्तु रूसो का सम्प्रभु सिर्फ विधि निर्माता होता है।

5. हॉब्स का व्यक्ति सामाजिक समझौते के द्वारा अपने सब अधिकार सम्प्रभु को सौंप देता है और इसके बदले में उसे आत्मसुरक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त होता। इसके विपरीत, रूसो का व्यक्ति सब

Scanned with CamScanner

कुछ खोने पर भी कुछ नहीं खोता है क्योंकि वह भी सम्प्रभुता में भागीदार होता है और जो अधिकार अपने ऊपर वह अन्य को देता है, वही अधिकार वह स्वयं दूसरों के ऊपर पा लेता है।

6. हॉब्स के सम्प्रभु पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं होता, परन्तु रूसो की सामान्य इच्छा के लिए उसका न्यायपूर्ण और नैतिक होना आवश्यक है और यह तभी सम्भव है जब वह सार्वजनिक कल्याण की भावना से कार्य करे।

संक्षेप में, हॉब्स और रूसो दोनों की संविदा के अन्तर्गत यद्यपि व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का समर्पण करते हैं, लेकिन अन्तर यह है कि रूसो इस समर्पण के बाद भी व्यक्ति की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रखता है, हॉब्स की संविदा के अन्तर्गत व्यक्ति की स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है। रूसो का राज्य भी निरंकुशता की दृष्टि से हॉब्स जैसा है, किन्तु जहां हॉब्स की निरंकुशता प्रभुसत्ता सम्पन्न राजा की स्वेच्छाचारिता का पोषण करती है, वहां रूसो की सामान्य इच्छा की प्रभुसत्ता का सिद्धान्त जनता की प्रभुसत्ता का प्रतीक है।

रूसो के राजदर्शन की आलोचना

(CRITICISM OF ROUSSEAU'S POLITICAL PHILOSOPHY)

राजनीतिक दर्शन के अन्तर्गत रूसो की विचारधारा बहुत अधिक आलोचना का विषय रही है। रूसो का दर्शन उसके पाठकों के लिए एक पहेली है। एक ओर तो उसे महान् दार्शनिक समझा जाता है जिसका राज्य के स्वरूप के विषय में ज्ञान अन्य किसी भी विचारक की अपेक्षा अधिक था तो दूसरी ओर उसे मिथ्याचारी तथा 'उलूकवाणी' विशेषणों से पुकारा गया है। वाल्टेयर जो रूसो का समकालीन था, रूसो के दर्शन पर व्यंग करते हुए लिखता है कि 'सोशल कान्ट्रेक्ट' को पढ़ने से मुझे दोनों हाथों और पैरों पर चलने की इच्छा होती है।[1] लेमीटर के अनुसार उसकी पुस्तक में असंगतियों की भरमार है।[2] रूसो की विचारधारा में प्रमुख रूप से निम्न दोष बताए जाते हैं।

1. **उसकी विचारधारा में असंगतियां एवं विरोधाभास**—रूसो की विचारधारा असंगतियों और विरोधाभासों से भरी पड़ी है। वह अपने सामाजिक समझौते का आरम्भ व्यक्ति के अधिकारों पर बल देने वाले व्यक्तिवाद से करता है, किन्तु इसकी समाप्ति व्यक्ति पर प्रभुता रखने वाली निरंकुश और समष्टिवादी विचारधारा के साथ करता है। वाहन ने ठीक ही लिखा है कि "एक ओर तो वह राज्य का प्रबल पोषक था, दूसरी ओर व्यक्ति का उग्र समर्थक था और वह इन दोनों विरोधी आदर्शों को नहीं छोड़ सका।[3] एक ओर वह व्यक्ति की स्वतन्त्रता का समर्थन करता है, दूसरी ओर उसे राज्य का दास बनाता है। एक ओर सहिष्णुता की नीति का उपदेश देता है, दूसरी ओर अपने गणराज्य से नास्तिकों को निष्कासित करता है।" इन विरोधाभासों के कारण ही मार्ले ने उसके बारे में लिखा है कि यद्यपि रूसो एक महान् विचारक कहा जाता है, किन्तु वह नहीं जानता कि विचार किस प्रकार किया जाता है।

2. **निरंकुशतावाद का समर्थक**—रूसो दार्शनिक आधार पर निरंकुशतावाद का समर्थक बन गया। उसने असीमित, अविभाज्य एवं अनियन्त्रित सम्प्रभुता का प्रतिपादन किया। उसने राज्य को ही अधिकारों का स्रोत बतलाया। उसने कहा कि 'जो व्यक्ति सामान्य इच्छा का पालन नहीं करेगा उसे सारा समाज आज्ञापालन के लिए मजबूर करेगा,' इसका अर्थ यह है कि उसे स्वतन्त्र होने के लिए मजबूर किया जाएगा। यह स्थिति रूसो के दर्शन में 'स्वतन्त्रता की दुविधा' (Paradox of Freedom) के नाम से जानी जाती है। रूसो व्यक्ति को सामान्य इच्छा या प्रभुसत्ता के विरुद्ध कोई अधिकार नहीं देता। वह सामान्य हित की बलिवेदी पर व्यक्तिगत अधिकार की भेंट चढ़ा देता है। वह सामान्य इच्छा के समुद्र में व्यक्ति की इच्छा को डुबो देता है, वह एक को अनेक की भीड़ में खो देता है। इस प्रकार लोकतन्त्र का यह महान् पुजारी निरंकुश राज्यसत्ता की स्थापना करता है। इसीलिए डुग्वी ने उसे जेकोबिन निरंकुशवाद का जन्मदाता तथा काण्ट और हीगल के निरंकुशवादी सिद्धान्तों को प्रेरणा देने वाला कहा है।

Scanned with CamScanner

3. **मानव स्वभाव सम्बन्धी आदर्शात्मक विचार**—रूसो का मानव स्वभाव सम्बन्धी विचार काल्पनिक व आदर्शात्मक है। वह मनुष्य को भला, शान्त एवं भोला-भाला मानता है जबकि मनुष्य के स्वभाव में अच्छाई व बुराई दोनों ही पायी जाती हैं।

4. **बुद्धिवाद और प्रगति का विरोधी**—रूसो बुद्धिवाद, विज्ञान और कला का विरोधी है। भावुकतावाद के प्रति अत्यधिक विश्वास रखने के कारण वह यह मानता था कि जीवन-यापन विवेक के अनुसार नहीं वरन् भावना के अनुसार किया जाना चाहिए। "उसकी अपील भावनाओं की अपील थी, तर्क की नहीं।" उसकी यह मान्यता थी कि विवेक, कला और विज्ञान ने मनुष्य का पतन कर दिया है और इसलिए उसका कल्याण तभी सम्भव है जबकि वह इनसे मुक्त होकर पुनः प्रकृति की ओर लौटे। इसलिए आलोचकों ने रूसो को प्रगति विरोधी कहा है। वाल्टेयर ने जब रूसो से 'सोशल कान्ट्रेक्ट' की प्रति प्राप्त की तो अपने धन्यवाद पत्र में लिखा "श्रीमानजी, मैंने मानव जाति विरोधी आपकी नवीन पुस्तक प्राप्त की जिसके लिए आपको धन्यवाद। हमें पशु बनाने के प्रयत्न में जितना परिहास आपने किया है, उतना कभी भी किसी ने नहीं किया। आपकी पुस्तक को पढ़ने से यही जी चाहता है कि चारों हाथों तथा पैरों से चलने लगूं, परन्तु इस अभ्यास को छोड़े हुए मुझे लगभग 60 साल हो चुके हैं, अतः अब इसे अपना सकना असम्भव है।" वाल्टेयर ने अपने एक अन्य पत्र में यहां तक लिखा कि "रूसो में और दार्शनिक में उतना ही साम्य है, जितना बन्दर और आदमी में है।"

रूसो का महत्व और योगदान

(ROUSSEAU'S SIGNIFICANCE AND CONTRIBUTION)

राजनीतिक विचारों के इतिहास में रूसो का नाम अमर है। वह आम आदमी का भावुक दार्शनिक था; उसे क्रान्ति का अग्रदूत तथा प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र का आवारा मसीहा कहा जाता है। डनिंग के शब्दों में "रूसो का दर्शन निश्चयमूलक (Conclusive) की अपेक्षा व्यंजनात्मक (Speculative) अधिक है, परन्तु रूसो की कल्पनाओं व मिथ्या उक्तियों ने जनता को जितना अधिक प्रभावित किया उतना माण्टेस्क्यू की सन्तुलित तर्कना तथा गम्भीर पर्यवेक्षण तक ने नहीं।" जी. डी. एच. कोल ने रूसो को राजदर्शन का पिता कहा है। उसके अनुसार 'सोशल कान्ट्रेक्ट राजदर्शन की दृष्टि से महानतम् ग्रन्थ है।' "यह कहना भूल है कि राजनीतिक विचारों पर रूसो का प्रभाव मृतप्राय है, उसके विपरीत वह बढ़ता जा रहा है।" राजनीतिक दर्शन को रूसो का योगदान इस प्रकार है।

1. **सामान्य इच्छा का सिद्धान्त**—रूसो के राजदर्शन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है उसके सामान्य इच्छा सम्बन्धी विचार। सामान्य इच्छा सिद्धान्त ने राजनीतिक जीवन में '**समुदाय**' के महत्व की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। डनिंग के अनुसार—"इन्हीं विचारों के द्वारा रूसो ने राष्ट्र-राज्य सम्बन्धी विचारों को बल दिया।"

2. **लोकप्रिय सम्प्रभुता की धारणा**—सामान्य इच्छा के सिद्धान्त से भी अधिक महत्वपूर्ण देन रूसो की 'लोकप्रिय सम्प्रभुता' की धारणा है। रूसो ने बताया कि राजनीतिक संस्था का स्वरूप कुछ भी हो उसमें जनता की सम्प्रभुता एक तथ्य है। उसने कहा प्रभुसत्ता जनता की सामान्य इच्छा में निहित है, सरकार सर्वोच्च सत्ता रखने वाली जनता की सेवक मात्र है। जनवाणी देव वाणी है, शासन का आधार जनता की सहमति है।

3. **राष्ट्रवाद का उद्घोषक**—रूसो यद्यपि राष्ट्रवाद का समर्थक नहीं था, किन्तु समूह की एकता और दृढ़ता की भावनाओं पर बल देकर उसने राष्ट्रभक्ति को एक आदर्श रूप दिया। रूसो ने सामान्य इच्छा के अपने सिद्धान्त द्वारा राष्ट्रवाद के नैतिक पक्ष को पुष्ट किया। रूसो की सामान्य इच्छा को राष्ट्र की आत्मा के रूप में मानकर हीगल ने एक ऐसे आदर्शवाद का प्रतिपादन किया जो उग्र राष्ट्रवाद में परिणत हुआ।

संक्षेप में, रूसो स्वतन्त्रता तथा समानता का पुजारी था, मगर व्यक्ति को राज्य के खिलाफ अधिकार न दे सका। वह सामान्य हित तथा सामान्य इच्छा का असाधारण दार्शनिक था। उसने लौकिक प्रभुत्व का सिद्धान्त दिया, सामान्य हित को व्यक्तिगत हित से महत्वपूर्ण बताया, प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र का समर्थन किया, जनता द्वारा कानून बनाने और राजनीति में हिस्सा लेने को उचित ठहराया, राज्य का हित सामान्य हित, राज्य का आधार सामान्य इच्छा बताया और यही उसके प्रगतिशील विचार थे। सम्पत्ति के बुरे प्रभाव को रूसो ने अच्छी तरह देखा, समाज को गरीब-अमीर में बंटे देखा, मनुष्य के शोषण को बुरा ठहराया, मगर वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण

Scanned with CamScanner

के अभाव में 18वीं शताब्दी के उभरते हुए पूंजीवादी युग में वर्गसंघर्ष न देख सका और एक प्रकार वह समाज में एकता का थोथा आधार दे चला।

रूसो के प्रभाव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसके दर्शन में आधुनिक काल की सभी प्रमुख विचारधाराओं—समाजवाद, अधिनायकवाद तथा व्यक्तिवाद के बीज मिलते हैं। बार्कर ने उसे व्यक्तिवाद का प्राण माना है। जर्मन और ब्रिटिश आदर्शवाद का तो वह अग्रदूत ही है। फ्रांस की राज्य क्रान्ति का सेहरा भी रूसो के क्रान्तिकारी विचारों को है। फ्रेंच क्रान्तिकारियों के बारे में बर्क ने लिखा है, "रूसो ही उनकी बाईबिल है, उसे ही वे पढ़ते हैं, मनन करते हैं।" अमरीकन तथा अन्य संविधानों में आरम्भ के शब्द "हम लोग" (We the People) रूसो की आवाज है। कोल ने ठीक ही लिखा है कि "रूसो की रचना 'सोशल कान्ट्रेक्ट' राजनीतिशास्त्र की एक सर्वोत्तम पाठ्य पुस्तक है।" लैन्सन के इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि आधुनिक युग को लाने वाले समस्त मार्गों पर हम उसे खड़ा हुआ पाते हैं।

रूसो का उद्देश्य सत्ता और स्वतन्त्रता का तालमेल स्थापित करना था। व्यावहारिकता में वह सत्ता की गोद में स्वतन्त्रता को बिलखता छोड़ गया। रूसो के बाद आने वाले तानाशाहों ने रूसो का दुरुपयोग किया, जिन्होंने जनता के हित की दुहाई देते हुए, अनुशासन, शान्तिव्यवस्था आदि के नाम पर अपनी इच्छा को सामान्य इच्छा बताते हुए नागरिकों के अधिकारों को समेट कर अपनी शक्ति की भूख मिटाई।

रूसो के राजदर्शन में व्यक्तिवाद, निरंकुशतावाद, समाजवाद और लोकतन्त्र

(ELEMENTS OF INDIVIDUALISM, ABSOLUTISM, SOCIALISM AND DEMOCRACY IN ROUSSEAU'S POLITICAL PHILOSOPHY)

रूसो के राजदर्शन में समाजवाद, निरंकुशतावाद और लोकतन्त्र की विचारधाराओं का अपूर्व सम्मिश्रण मिलता है, जो इस प्रकार है—

रूसो के दर्शन में व्यक्तिवाद—रूसो के दर्शन में व्यक्तिवाद के बीज दिखलायी देते हैं। वेपर के अनुसार 'वह अति व्यक्तिवादी है, समस्त व्यक्तिवादियों में आधुनिक और महानतम् व्यक्तिवादी है।'[1] उसने स्वतन्त्रता और समानता को मनुष्य का स्वाभाविक सद्गुण माना और उसके सिद्धान्त में व्यक्ति की स्वतन्त्रता लॉक से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

रूसो के राजदर्शन में निरंकुशतावाद—रूसो के दर्शन में निरंकुशतावाद के तत्व भी मौजूद हैं। रूसो के अनुसार सम्प्रभुता सामान्य इच्छा की कार्यान्विति है। सामान्य इच्छा को सम्प्रभु मानने का आधार सामाजिक समझौता है। सामान्य इच्छा पर दैवी और प्राकृतिक नियमों का प्रतिबन्ध नहीं होता। यही कानून का निर्माण करती है, धर्म का निरूपण करती है, नैतिक और सामाजिक जीवन को संचालित करती है। इसकी कोई अवहेलना नहीं कर सकता। जो इसकी अवज्ञा करता है, उसे इसका पालन करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। रूसो की सामान्य इच्छा उन सभी लक्षणों—सर्वोच्चता, अखण्डता, निरंकुशता आदि से पूर्ण है जो निरंकुशता के आधार समझे जाते हैं और इसी आधार पर डाइड ने लिखा है कि 'रूसो सामान्य इच्छा की आड़ में बहुमत की निरंकुशता का प्रतिपादन तथा समर्थन करता है।'

रूसो के सामाजिक समझौते में निरंकुशतावाद का एक प्रमुख तत्व यह है कि समझौते में व्यक्ति अपनी समस्त शक्तियों का समर्पण कर देता है और समझौते के परिणामस्वरूप उत्पन्न सामान्य इच्छा पूर्ण तथा निरंकुश है।

रूसो के समझौते सिद्धान्त के आधार पर जिस राजनीतिक समाज की रचना होती है वह पृथक् व्यक्तियों का समूह मात्र है जिसका उद्देश्य उन व्यक्तियों के हितों का साधन करना मात्र हो, अपितु समाज एक सावयव है और व्यक्ति उसके अभिन्न अंग हैं। सामान्य इच्छा इस सावयव को विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करती है और समाज रूपी इस सावयव को अपने अंगों (व्यक्तियों) पर निरंकुश सत्ता प्राप्त है। रूसो की इस धारणा को जर्मन आदर्शवादी हीगल ने अपनाया। हीगल को प्रशिया के निरंकुश राज्य का समर्थन करने की प्रेरणा रूसो से मिली। रसेल के अनुसार रोबोस्पियर का आतंक राज्य और बोल्शेविक रूस तथा नाजी जर्मनी के अधिनायकवाद भी रूसो की शिक्षाओं का परिणाम है।

Scanned with CamScanner

रूसो लोकतन्त्र का अग्रदूत—रूसो को लोकतन्त्र का पुजारी कहा जाता है। उसने 'जनता की प्रभुसत्ता' के विचार को फ्रेन्च राज्य क्रान्ति के माध्यम से आधुनिक काल का सबसे प्रभावशाली विचार बनाया। उसके मतानुसार सर्वोच्च शक्ति जनता में निहित रहती है, सामान्य इच्छा जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति है और यह इच्छा सदैव जनता के सामान्य हित के पोषण और वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहती है। रूसो प्रत्यक्ष लोकतन्त्र का समर्थक है। रूसो के सामाजिक अनुबन्ध से व्यक्तियों को स्वतन्त्रता और समानता के वे महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त होते हैं जो लोकतन्त्र का आवश्यक तत्व समझे जाते हैं। उसकी स्वतन्त्रता पर लगाए गए कानूनी बन्धन वस्तुतः बन्धन नहीं हैं क्योंकि कानून सामान्य इच्छा द्वारा बनाया जाता है और सामान्य इच्छा में उसकी अपनी इच्छा सम्मिलित होती है, अतः यदि उसकी स्वतन्त्रता पर कोई प्रतिबन्ध लगा दिए जाते हैं तो वे उसकी अपनी इच्छा से प्रादुर्भूत होने के कारण प्रतिबन्ध नहीं रहते हैं और उसकी स्वतन्त्रता में बाधक नहीं बनते हैं। रूसो की व्यवस्था में व्यक्तियों को समानता का अधिकार भी प्राप्त होता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के समान सर्वोच्च अधिकार और कर्तव्य रखता है। लोकतन्त्र का एक महत्वपूर्ण तत्व शासन के कार्य में जनता की सहमति और सहयोग तथा भागीदारी है। रूसो सामान्य इच्छा के सिद्धान्त द्वारा शासन में जनता के सहयोग और भागीदारी पर बहुत बल देता है। इस तरह वह लोकतन्त्र के सभी आधारभूत तत्वों और मौलिक विचारों का प्रबल पोषक है।

रूसो के दर्शन में समाजवाद—रूसो के विचारों में समाजवाद के कई तत्व दिखलायी देते हैं। समाजवाद व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देता है। रूसो की सामान्य इच्छा भी व्यक्ति के हित की अपेक्षा समाज के हित को अधिक महत्व देती है। रूसो ने समानता पर काफी जोर दिया। उसकी यह दृढ़ मान्यता है कि समानता के अभाव में स्वतन्त्रता नहीं टिक सकती। वह आर्थिक विषमता को समाप्त करना चाहता है। उसने निजी सम्पत्ति पर प्रबल प्रहार किए हैं। उसके अनुसार राज्य को विलासिता सम्बन्धी वस्तुओं पर भारी कर लगाना चाहिए। समस्त भौतिक सम्पत्ति का स्वामी राज्य है। रूसो ने वस्तुतः समाज में आर्थिक विषमता को ही सभी बुराइयों की जड़ माना है।

Scanned with CamScanner